

द्वितीय अध्याय

स्त्री संवेदना की अवधारणा

संवेदना मानव मन की या यों कहो उसके चेतनता की वह अवस्था है जिसकी प्रतीति मानव को उसके जागृत अवस्था पर पहुंचाकर एक दृष्टि प्रदान करती है प्राणीजगत के सभी जीव जब निजता और परदुःखकातरता से अभिभूत होकर जीवन जीने की कला सीख जाते हैं, भावना के अतिरेक में संतुलन बैठाना और बुद्धि का प्रयोग कर हृदय के सापेक्ष रखकर अपने विचारों का विनिमय करना उनको आने लगता है तब मानवता का सृजन होता है। मानवता का सृजन होना ही संवेदना के होने का परिचायक है। संवेदना के केन्द्र में वेदना का होना मुख्य है। कारण तत्व वेदना है क्योंकि साहित्य के सृजन में वेदना 'बीज' का नियामक है। अब उसमें समता और सहिष्णुता का पुट देकर समाज ग्राह्य बनाने का कार्य कलाविद, कवि, लेखक का होता है।

इसका प्रथम अभिज्ञान हमें आदि कवि वाल्मीकि के द्वारा होता है। वाल्मीकि ने क्रौंच वध की घटना से द्रवित होकर नई भाषा, नए छंद, नए कथ्य, नए अन्दाज और नए भावभूमि के साथ पहला महाकाव्य रामायण यानी साहित्य को लिखकर आदि कवि होने का गौरव प्राप्त किया। वेदना कैसे संवेदना बनती है इसका उत्कृष्ट उदाहरण वाल्मीकि की यह पंक्ति करती है-

“मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समा।

यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितम् ॥”

शोक से अभिभूत उनके हृदय से यह करुण कलित उद्गार फूट पड़ी और यहीं से श्लोक रूपी छन्द का निर्माण हुआ जो वैदिक भाषा, छन्द एवं संवेदना से इतर मानव के नीजीपन की धरातलीय अनुभूति थी। इसी का अनुगमन करके साहित्य अपनी विकास यात्रा के उस चरण पर पहुँचा है, जहाँ पर वह जन-जन के संवेदना से

लिपटकर मन-मन का साहित्य बनाता जा रहा है, जिसकी एक धारा 'स्त्री विमर्श' की संवेदना भी है।

मानव एक संवेदनशील प्राणी है। वर्तमान समय का चक्र बुद्धिवादी सभ्यता एवं विज्ञान का युग है। यांत्रिकी का कलुष पक्ष उसे धीरे-धीरे संवेदनशून्य बनाता जा रहा है। अपने नजदीकी सम्बन्धियों के सुख-दुख से भी आज आम आदमी का नितांत असम्पृक्त रहना उसके यंत्र मानव बनते जाने की प्रक्रिया का प्रतीक है। ऐसी विषम परिस्थिति में उसके शुष्कप्राय मरु हृदय को संवेदन- सलील से अभिसिंचित करना सर्जक का परम दायित्व है। हिन्दी के अनेक साहित्यकार इस पवित्र अनुष्ठान को पूर्ण करने में संलग्न हैं।

इसी संवेदनात्मक वृत्ति की अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से जनता के चित्तवृत्तियों तक पहुंचाने का कार्य साहित्य जगत के पुरोधा करते चले आ रहे हैं, जिनके मध्य 'स्त्री विमर्श' की संवेदना को प्रस्फुटित करने का कार्य स्त्री लेखिकाएँ पुरजोर से कर रही हैं। नारी संवेदना क्या है? के प्रश्न को स्पष्ट करने हेतु 'संवेदना' का अर्थघटन करना आवश्यक है।

संवेदना से आशय-

संवेदना शब्द संस्कृत शब्द 'संवेदन' से निर्मित है, जिसका अर्थ होता है "अनुभव", "अनुभूति", या "भावना"। संवेदना मनुष्य की आवश्यकता, इच्छा, अनुभव और भावनाओं का प्रतिस्पर्धी, भावुक और अभिप्राय शील अनुभव है।

संवेदना मानसिक अनुभवों को व्यक्त करने और महसूस करने की क्षमता है। यह मनुष्य को उसके अनुभवों, भावनाओं, संवेदनाओं और इच्छाओं को समझने और उन पर प्रतिक्रिया देने की अनुमति देती है। संवेदना उस भावुकता, उत्तेजना और उत्प्रेरणा को जीने की शक्ति है जो हमें इंसानी बनाती है।

संवेदना मानसिक, भावनात्मक, और मनोवैज्ञानिक विषयों के अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग है। यह मनोवैज्ञानिक शोध और विज्ञान के क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। संवेदना व्यक्ति को उसके आस-पास के दुनिया के प्रति संवेदनशील बनाती है। यह उन्हें दूसरों के भावनाओं और अनुभवों के प्रति संवेदनशील बनाती है और सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से उनकी समझ और सहयोग को बढ़ाती है।

संवेदना एक मानसिक स्थिति है जो आपत्ति जनक, आनंददायक, उदास, दुःखी, प्रशांत, प्रभावित, भावुक, खुशी, रोमांच, भय आदि के रूप में प्रकट हो सकती है। संवेदना व्यक्ति के अंतर्मन की स्थिति को दर्शाती है और उसकी मानसिक स्थिति को प्रभावित करती है।

संवेदना विभिन्न प्रकार की हो सकती है, जैसे कि भौतिक, भावनात्मक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, रोमांचकारी, कलात्मक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, आदि। संवेदना हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है जो हमें इंसानी बनाता है और हमें दुनिया के साथ संवाद करने में मदद करता है। संवेदना मानवीय अनुभवों का महत्वपूर्ण घटक है और इसका महत्व सामान्य जीवन में भी प्रमुख है। यह एक सामान्य मानवीय गुण है जो हमें समझने, संवाद करने, और दूसरों के साथ संपर्क में रहने में मदद करता है। संवेदना का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह हमें दूसरे लोगों के भावनात्मक अनुभवों को समझने की क्षमता प्रदान करती है। यह हमें अन्य व्यक्तियों के दुःख, सुख, उत्साह, निराशा, प्यार, क्रोध, आदि को महसूस करने में सक्षम बनाती है। यह हमें उनकी स्थिति को समझने में मदद करती है और हमें साथीकारी, समर्थन, और सहानुभूति प्रदान करने की क्षमता विकसित करती है।

संवेदना हमारे बीना-बोले भाषा का भी एक माध्यम है। हम अपने भावों और भावनाओं को शब्दों, आभासी भाषा, व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, आदि के माध्यम से संवाद

कर सकते हैं। इसके माध्यम से हम अपने अंदर के भावों को व्यक्त कर सकते हैं और दूसरों के साथ सहयोग और समझ में सहायता कर सकते हैं।

संवेदना भी सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करने और संवाद में मदद करने का एक महत्वपूर्ण कारक है। जब हम दूसरों के भावों को समझते हैं और उन्हें महसूस करते हैं, तो हमारे संबंध में संवाद, सहयोग, और समर्थन का स्तर बढ़ता है। यह हमें सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से अधिक संवेदनशील बनाता है और हमें अपने साथियों के अभिव्यक्ति का सम्मान करने और समर्थन करने की क्षमता प्रदान करता है।

संवेदना विभिन्न सामाजिक, कला, साहित्य, और मनोविज्ञान शाखाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसका अध्ययन हमें अपने और दूसरों के मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को समझने, मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने, और सामरिक, सांस्कृतिक, और कलात्मक अभिव्यक्ति में सुधार करने में मदद करता है।

संक्षेप में कहें तो, संवेदना मानवीय अनुभव, भावना, और भावों का महत्वपूर्ण पहलु है। यह हमें दूसरों के भावनात्मक अनुभवों को समझने, संवाद करने, और साथ रहने में मदद करती है। इसके माध्यम से हम अपने अंदर के भावों को व्यक्त कर सकते हैं, दूसरों के साथ सहयोग कर सकते हैं और समझदारी और संवाद के स्तर को ऊंचा कर सकते हैं। संवेदना मानवीय जीवन के आधारभूत तत्व है जो हमें इंसानी बनाता है और हमें अपने सामरिक, सांस्कृतिक, नैतिक और वैज्ञानिक संवाद में सहयोग करता है।

संवेदना विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू भी है। जब हम संवेदनाशील होते हैं, तो हमारी आत्म-सदुद्देश्यता, स्वतंत्रता और समानता की भावना विकसित होती है। हम अपने आप को और दूसरों को बेहतर ढंग से समझने में सक्षम होते हैं और समस्याओं का समाधान निकालने में महारत प्राप्त करते हैं।

संवेदना एक संवेदक का कार्य भी करती है, जिसे हम अपने शरीर, मन और आत्मा के साथ जोड़ते हैं। हमारे शारीरिक संवेदनाशीलता हमें खुद की भौतिक अनुभूतियों को समझने में मदद करती है, हमारे मन की संवेदनाशीलता हमें अपने भावों और भावनाओं को समझने में मदद करती है, और हमारी आत्मिक संवेदनाशीलता हमें आत्म-परिचय और आंतरिक सत्य को अनुभव करने में सक्षम बनाती है।

संवेदना एक संवेदी और संवेदक के बीच संपर्क का माध्यम भी है। यह हमें दूसरों के साथ एकांत में संपर्क करने और उनके साथ सहयोग करने की क्षमता प्रदान करती है। यह हमें अपने संबंधों को मजबूत करती है, और हमें सामरिक और सामाजिक माध्यमों के माध्यम से दूसरों के साथ जुड़ने में सक्षम बनाती है।

अंततः संवेदना हमारे मानवीयता की एक प्रतिष्ठित गुण है जो हमें दूसरों की समझ, समर्थन, सहानुभूति और प्रेम की ओर ले जाता है। यह हमें संविधानिक मानवाधिकार, नैतिकता, और वैज्ञानिक सोच की मूल्यों के साथ संपन्न बनाती है। संवेदना हमारे जीवन को गहराई और अर्थपूर्णता से भर देती है और हमें एक उन्नत, समर्पित और समानतापूर्ण समाज की ओर आगे बढ़ने में मदद करती है।

संवेदना का स्वरूप निर्धारण

संवेदना मानसिक एवं भावनात्मक अनुभवों का स्वरूप है। यह एक अंतरंग अनुभव है जो मनुष्य की मनसिकता, भावनाएं, और विचारों को प्रभावित करता है। संवेदना का स्वरूप स्थानीय और स्थानिक दोनों हो सकता है, यानी यह व्यक्ति के अंदर उत्पन्न हो सकती है और उसके बाहरी परिवेश से भी प्रभावित हो सकती है। संवेदना का स्वरूप नाना प्रकार की हो सकती है, जैसे कि खुशी, दुःख, आनंद, भय, उत्साह, आश्चर्य, घृणा, प्रेम, आदि। यह अनुभवों और भावनाओं के रूप में प्रकट हो

सकती है और मन की स्थिति को प्रतिबिंबित कर सकती है। संवेदना के स्वरूप में यह भी मान्यता है कि यह शक्ति अद्वितीय और अविच्छिन्न है, अर्थात् एक संपूर्ण अनुभवों की समस्तता को अपनाती है। इसके द्वारा हम अनुभव की गहराई में जा सकते हैं, और उसे व्यक्त करने का माध्यम बना सकते हैं। संवेदना का स्वरूप अनिश्चितता और परिवर्तनशीलता का भी होता है। इसे अल्पकालिक अनुभव के रूप में भी महसूस किया जा सकता है, जो आ जाता है और फिर गुजर जाता है। इसके साथ ही, संवेदना दिनचर्या, परिस्थितियों, और अन्य भावनात्मक कारकों के प्रभाव में परिवर्तित हो सकती है। संवेदना आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का भी एक हिस्सा है। यह मन की स्थिति, भावनाएं, और अनुभवों को शोधने और समझने में मदद करती है। संवेदना के स्वरूप का अध्ययन हमें मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास, और सामाजिक संबंधों की मूल्यांकन में मदद करता है। संवेदना का स्वरूप सुदृढ़, परिस्थितिकी और व्यक्तिगत हो सकता है। हर व्यक्ति की संवेदना अद्वितीय होती है और उसकी व्यक्तिगतता को प्रतिबिंबित करती है। व्यक्तिगत संवेदना हमारी अनुभूति की गहराई को दर्शाती है और हमें खुद की अद्वितीयता और व्यक्तित्व के साथ पहचानने में मदद करती है।

संक्षेप में कहें तो, संवेदना मानसिक और भावनात्मक अनुभवों का स्वरूप है जो व्यक्ति की मनसिकता का समर्थन करता है। यह अनुभवों की गहराई और व्यक्तित्व को प्रकट करने में मदद करता है और हमें दूसरों के अनुभवों को समझने और सहयोग करने की क्षमता प्रदान करता है। संवेदना मानवीय जीवन का अहम अंग है और हमें अपने और दूसरों के साथ संवाद में सहयोग करता है। इसके माध्यम से हम अपने भावों, भावनाओं, और विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मानदंडों को समझने में मदद करता है। संवेदना हमें एक संपूर्ण मानवीय

बनाती है और हमें अपने और दूसरों के साथ एकसमानता, सहयोग, और प्रेम की ओर ले जाती है।

संवेदना में वेदना का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वेदना संवेदना का एक प्रमुख घटक है और इसके बिना संवेदना की कोई सम्पूर्णता नहीं हो सकती है। वेदना हमारे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक अनुभवों की मूल भाषा है जो हमें अपने अंदर की स्थिति को समझने और व्यक्त करने में मदद करती है।

वेदना एक उत्प्रेरक रूप में कार्य करती है, जो हमें आनंद, दुःख, सुख, गहराई, ताप, ठंड, और अन्य भौतिक वेदनाएं महसूस करने की क्षमता प्रदान करती है। इसके साथ ही, वेदना भावनात्मक अनुभवों को भी प्रतिबिंबित करती है, जैसे कि प्यार, क्रोध, उत्साह, आश्चर्य, आदि। यह हमें अपनी भावनाएं और भावों को समझने में मदद करती है और उन्हें व्यक्त करने का माध्यम बनाती है।

संवेदना और वेदना का सम्बन्ध अटूट होता है, क्योंकि संवेदना वेदनाओं को जीवंत करती है और उन्हें अपनाते और समझने की क्षमता प्रदान करती है। संवेदना वेदनाओं की जीवनशक्ति होती है और उन्हें मानसिक और भावनात्मक अनुभवों के रूप में व्यक्त करने में सहायता करती है।

वेदना हमारे जीवन का महत्वपूर्ण घटक है और हमें अपनी स्वास्थ्य, आत्म-परिचय, और जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करती है। इसके माध्यम से हम अपने शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं को पहचानते हैं, अपने संबंधों को समझते हैं और सामान्यता से जीवन को अनुभव करते हैं।

अंततः संवेदना और वेदना दोनों ही मनुष्य की अनुभूति के महत्वपूर्ण पहलु हैं और एक दूसरे के साथ सम्पूर्णता का प्रतीक हैं। यह हमें हमारे अंदरी और बाहरी विश्व की भाषा को समझने और संवाद करने में सहयोग करती हैं, जिससे हम अपने

और दूसरों के साथ संपर्क में रह सकते हैं और सहयोगपूर्ण समाज का निर्माण कर सकते हैं ।

संवेदना के दो मुख्य पक्ष हैं -

बुद्धि पक्ष (Cognitive Aspect) और भाव पक्ष (Affective Aspect):

बुद्धि पक्ष (Cognitive Aspect):

बुद्धि पक्ष संवेदना के एक विशेष पहलु को दर्शाता है जो अपनी मानसिक तत्वों और अनुभवों के माध्यम से संवेदनाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए मानवीय बुद्धि का उपयोग करता है। इस पक्ष के अंतर्गत हम संवेदनाओं को समझने, वर्णन करने, विश्लेषण करने और संवेदनाओं की विभिन्न पहचान करने की क्षमता विकसित करते हैं। इसके अंतर्गत शामिल हो सकते हैं मनसिक प्रक्रियाएं जैसे कि स्मृति, तर्क, विमर्श, तार्किकता, और संज्ञानात्मक क्षमता। बुद्धि पक्ष संवेदना को एक सामंजस्यपूर्ण और विचारशील अनुभव के रूप में संज्ञान करने और इसे व्यक्त करने में मदद करता है।

भाव पक्ष (Affective Aspect):

भाव पक्ष संवेदना के दूसरे पहलु को दर्शाता है जो भावनात्मक तत्वों और अनुभवों को समझने और व्यक्त करने के लिए भावनात्मक और आन्तरिक प्रक्रियाओं का उपयोग करता है। इस पक्ष के अंतर्गत हम अपने भावों, आवेगों, उत्तेजनाओं, और भावनात्मक अनुभवों को महसूस करने, व्यक्त करने, और प्रभावित करने की क्षमता विकसित करते हैं। इसके अंतर्गत शामिल हो सकते हैं मूड, भाव, प्रेम, द्वेष, आत्मासात्म्य, और आनंद। भाव पक्ष संवेदना को एक सात्विक, आनंदमय और भावनात्मक अनुभव के रूप में संज्ञान करने और इसे व्यक्त करने में मदद करता है।

यह दोनों पक्ष संवेदना के पूर्णतापूर्ण अनुभव को समझने में सहायता करते हैं और हमें उसे संपूर्णता के साथ व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करते हैं। बुद्धि पक्ष

विचारशीलता और तार्किकता के माध्यम से संवेदना को समझने में मदद करता है, जबकि भाव पक्ष भावनात्मक और आन्तरिक प्रक्रियाओं के माध्यम से संवेदना को व्यक्त करने में मदद करता है। ये दोनों पक्ष संवेदना के एक पूरक और अभिन्न अंग हैं जो हमारे अंदरी और बाहरी विश्व की पूर्णता को समझने और अनुभव करने में मदद करते हैं। बुद्धि पक्ष संवेदना को विश्लेषण करने, समझने, और विचारशीलता के माध्यम से उसे व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करता है। यह हमें संवेदना की विभिन्न पहचान करने, उन्हें शान्त, तटस्थ और विचारशीलता के साथ व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करता है।

वहीं, भाव पक्ष संवेदना को भावनात्मक और आन्तरिक प्रक्रियाओं के माध्यम से समझने, अनुभव करने, और व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करता है। यह हमें अपने भावों, आवेगों, और उत्तेजनाओं को महसूस करने, समझने, और व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करता है। भाव पक्ष संवेदना को एक सात्विक, सुखद और भावनात्मक अनुभव के रूप में संज्ञान करने और इसे व्यक्त करने में मदद करता है।

इन दोनों पक्षों का संयोग हमें संवेदना के समूचे स्पेक्ट्रम को समझने, अनुभव करने, और व्यक्त करने में सहायता करता है। बुद्धि पक्ष विचारशीलता और तार्किकता के माध्यम से संवेदना की विविधता को समझने में मदद करता है, जबकि भाव पक्ष भावनात्मक और आन्तरिक प्रक्रियाओं के माध्यम से संवेदना को व्यक्त करने में मदद करता है। इन दोनों पक्षों के संयोग द्वारा हम अपनी अंदरी और बाहरी विश्व की सम्पूर्णता को समझ सकते हैं और संवेदना के माध्यम से अपने और दूसरों के साथ संपर्क में रह सकते हैं।

संवेदना अर्थ और परिभाषाएँ

जानेन्द्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ व त्वचा) के माध्यम से व्यक्ति को जो उत्तेजना के बाहरी गुणों का क्षणिक ज्ञान मिलता है उसे ही संवेदना कहते हैं। अर्थात्

संवेदना मस्तिष्क की एक प्रारंभिक, सामान्य व सरल प्रक्रिया है जो उत्तेजक के प्रति होती है। संवेदना मस्तिष्क, ज्ञान, हृदय पर आधारित होती है। किन्तु हृदय उसकी 'अभिव्यक्तिपरक अवस्था पर अवलम्बित होता है। संवेदना का मुख्य' भान दिमाग और ज्ञानाश्रित है। स्त्री संवेदनात्मक साहित्य का आधार स्त्री जीवन का सम्यक बोध है। व्यक्ति अपने परिवेश के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक परिवर्तनों से अक्षुण्ण रूप से जुड़ा रहता है। परिवेश का दबाव वह अपनी चेतना, अपने जीवन पर पाता है। कलाकार अपने रचना कर्म में परिवेशगत संवेदनाओं को ग्रहणकर अभिव्यक्त करना चाहता है। इसी से उसकी रचना सजीव एवं प्रमाणिक बनती है। संवेदना परिवर्तन का मुख्य कारण मूल्य परिवर्तन है। मूल्य परिवर्तन के कारण ही संवेदना एवं स्त्रीत्व' का बोध होता है। साहित्यकार में कल्पनाशक्ति और संवेदनशीलता अधिक होने से वह अपने परिवेश को अधिक गहराई से समझ सकता है। साहित्यकार की स्त्री संवेदना परक संवेदनशीलता एवं रचना प्रक्रिया को समझने से पहले संवेदना का अर्थ घटन कर लेना आवश्यक है।

व्युत्पत्तिगत अर्थ

ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव अथवा ज्ञान संवेदना कहलाती है ।

अ-कोशगत अर्थ

विभिन्न कोश ग्रन्थों में संवेदना का अर्थ निम्न हैं-

प्रामाणित हिन्दी कोश (i) "मन में होने वाला, बोध या अनुभव"

(ii) सारे शरीर में फैले हुए तन्तुओं का जाल अनुभूति ही संवेदना है"

जिससे स्पर्श, शीत, ताप, सुख, पीड़ा आदि का अनुभव या ज्ञान होता है।

मानविकी पारिभाषिक कोश दर्शनखण्ड "किसी बाहरी या आन्तरिक प्रभाव से इंद्रियों और उनसे सम्बन्धित स्नायु प्रणाली की उत्तेजना से उत्पन्न होने वाला अनुभव

संवेदना है। संवेदना के दो पक्ष हैं मनोवैज्ञानिक और ज्ञानात्मक । इनमें से दूसरा पक्ष दर्शन के लिए महत्व रखता है। यद्यपि इन दोनों को अलग करना संभव नहीं है।”²

मानविकी पारिभाषिक कोश साहित्य खण्ड

मूलतः संवेदना का अर्थ है ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव अथवा ज्ञान किन्तु आज सामान्यतः इसशब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा है। किन्तु मनोविज्ञान में अब भी इस शब्द का प्रयोग इसके मूल अर्थ में ही किया जाता है और उस अर्थ में यह किसी बाह्य उत्तेजना के प्रति शरीर यंत्र की सर्वप्रथम संचेतन प्रतिक्रिया होती है। इसी के फलस्वरूप हम अपने परिवेश के संबंध में ज्ञान प्राप्त करते हैं। संवेदना के लिए किसी न किसी उत्तेजना की आवश्यकता होती है और उससे संबन्धित गुण ही हममें संवेदना जगाता है। किन्तु यहाँ जहाँ इसमें एक और वस्तुपरकता की अपेक्षा है, वहीं यह व्यक्ति सापेक्ष भी है और साहित्य में इसका प्रयोग स्नायविक संवेदनाओं की अपेक्षा मनोगत संवेदनाओं के लिए ही अधिक होता है। इस दृष्टि से अनुभूति और भावप्रवण व्यक्ति की संवेदनाएँ अधिक जागृत एव होती है, वह अधिक संवेदनशील होता है। एक साधारण सी घटना जिसकी ओर सामान्य व्यक्ति का ध्यान भी आकृष्ट न हो, संवेदनशील व्यक्ति के मन में भावनाओं का तूकान जगा सकती है। इस प्रकार साहित्यिक संदर्भ में संवेदनशीलता मन की प्रतिक्रिया की शक्ति ही है जिसके द्वारा संवेदनशील व्यक्ति दूसरे किसी व्यक्ति के सुख-दुःख को समझकर उससे अपना तादात्म्य कर लेता है।”³

ज्ञान शब्दकोश

संवेदना- ज्ञान, अनुभूति, जताना सूचित करना, प्रकट करना”

हिन्दी विश्वकोश खण्ड 23

“अनुभव करना, सुख-दुःख आदि की प्रतीति करना।”

हिन्दी शब्द सामर्थ्य

“अनुभूति-अनुभव जब आन्तरिक तीव्रता प्राप्त कर लेता है तब उसे अनुभूति कहते हैं।”

संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ

“संवेदना अर्थात् प्रतीति, बोध। अनुभव करना प्रकट करना।”

Authentic Senior Dictionary of the English Language!

Sensation (N) sensual perception इन्द्रिय जनित ज्ञान Feeling अनुभव
emotional excitement produced by Some event चेतना

कोशग्रंथों के आर्थिक पर्यवेक्षणोपरांत स्पष्ट है कि संवेदना व्यक्ति के समग्र जीवन से या उसके किसी एक भाग से उद्भूत एक ऐसी अवस्था है जो जागृति, चेतनता स्व की पहचान व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक दुःखकातरता का प्रत्यक्ष या आन्तरिक अभिव्यक्ति है। चेतना के स्तर को एक कुशल साहित्यकार स्वानुभव से समाजोनुभव मुखी बनाता है। वही विषयवस्तु जब साहित्य के माध्यम से जन-जन तक पहुँचता है तो विभिन्न विमर्शों, आयामों के माध्यम से उसका विश्लेषण किया जाता है। सांवेदिक प्रक्रिया भी साहित्य में प्रस्तुत समाज के कच्चे माल (घटनाओं) का एक प्रदीर्घ परंपरा है जिसका अनुसंधान के स्तर पर विभेदीकरण किया जाना आवश्यक है।

परिभाषा-

भारतीय विद्वानों की दृष्टि में

1) डॉ. शेखर शर्मा:

“संवेदना हमारे मन की कुटज अवस्था है, जिसमें हमें विश्व की वस्तु विशेष का बोध न होकर उसके गुणों का बोध होता है।”⁹

2) डॉ. वीरेन्द्र सिंह :

“संवेदना मात्र बोध नहीं हैबोध को अन्तश्चेतना द्वारा विशेष रूप से ग्रहण करना है। संवेदना का स्वरूप एक मनोविज्ञानिक तथ्य है 'संवेदना' एक मानसिक और हृदयगत सत्ता है जिसमें भाव, संवेग, मनोवृत्तियाँ तथा प्रच्छन्न विचारों तथा अवधारणाओं का एक संयमित आवेग रहता है।”¹⁰

3) डॉ. सुरेश सिन्हा:

“संवेदना से अभिप्राय है वह अनुभूतिप्रवणता जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण करने की क्षमता से पूरित होती है। इसका अर्थ यह भी होता है कि कोई साहित्य किन् भावनाओं की प्रतीति हमें करा सकने में समर्थ होता है। भावनाओं के ये स्तर विविध होते हैं। वह आधुनिक बोध भी हो सकता है या मानव अस्तीत्व की बुनियादी विश्वासाँ भी। वह व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावना भी हो सकती है या यथार्थ के नये तत्वों की अन्विति भी ।”¹¹

4) डॉ० राजेन्द्रकुमार :

“संवेदना विशुद्ध ऐन्द्रिय संवेदना का पर्याय नहीं है ऐन्द्रिय संवेदना बाह्य यथार्थ के ऐन्द्रिय प्रभावों को ग्रहण करते हैं बस उनकी इतनी ही इयता है। संवेदना इससे कुछ आगे की चीज है। ऐन्द्रिय प्रभावों का ग्रहणशीलता के स्तर पर प्रभाव न रहना बल्कि आन्तरिक यथार्थ के अनुभव में ढल जाना और फिर किसी बृहत्तर किन्तु सूक्ष्म अन्तर्बोध या की भावदृष्टि से उसका संयोजित होना इस पूरी प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप जो चीज उभरती है, वस्तुतः उसी को संवेदना का नाम दिया जाना चाहिए।”¹²

5) मुक्तिबोध :

इनके लिए संवेदना का स्वरूप अर्न्तजगतसापेक्ष है जो बाह्य यथार्थ का अभ्यन्तरीकरण है। मुक्तिबोध ने ज्ञानात्मक संवेदना तथा संवेदनात्मक ज्ञान पर विचार किया है।

(1) ज्ञानात्मक संवेदना:

जीवन-जगत का जो बोध है। उसका व्यापक होना, पुष्ट होना, विश्व में जो ज्ञान का स्तर प्राप्त है, उसको आत्मसात करना और उससे आगे बढ़ना आवश्यक है। भावना उसी क्षेत्र में सक्रिय होती है जो क्षेत्र वस्तुतः ज्ञानशक्ति द्वारा गृहीत हो। बोध यानी ज्ञान के क्षेत्र के भीतर ही भावना की कि पहुँच है उसके बाहर नहीं। इसलिए यह आवश्यक है हमारे जीवन का ज्ञानात्मक आधार व्यापक और विकसित हो। ज्ञान भी एक तरह का अनुभव है या तो वह 'हमारा, अनुभव है या दूसरों का। उससे निकलते हैं निष्कर्ष, उससे होता है जीवन-विवेक का विकास। यही व्यापक, विकसित जीवन-विवेक ही ज्ञानात्मक संवेदना है।

(2) संवेदनात्मक ज्ञान:

लेखक के विचार या उसकी अनुभूतियाँ वस्तु तत्व के वस्तुमूलक आकलन पर आधारित नहीं होती हैं जीवन-यथार्थ से नियंत्रित न होकर उसके आत्मबद्ध दृष्टिकोण के फलस्वरूप विकल्पग्रस्त होती हैं। ऐसी स्थिति में लेखक की भावना का ज्ञानात्मक आधार ही गलत होता है। इस ज्ञानात्मक आधार की विकृति के फलस्वरूप उसकी भावना भी विकारग्रस्त ही होती है। अर्थात् यह संवेदना व्यक्तिनिष्ठ और काल्पनिक होती है। इसमें आत्मविस्तार की गुंजाईश नहीं होती है।

संक्षेप में- संवेदना शब्द मात्र भावुकता या भावप्रवणता तक ही सीमित न होकर ज्ञान और विवेक को भी अपने अन्दर समो लेता है। इस शब्द में बौद्धिकता का भी बहुतायत मात्रा में समावेश होता है। अज्ञेय के अनुसार संवेदना वह यंत्र है

जिसके सहारे जीव-यदि अपने से इतर सब कुछ के साथ संबंध जोड़ती है। वह संबन्ध एक साथ ही एकता का भी है और भिन्नता का भी क्योंकि उसके सहारे जहाँ जीव-यष्टि अपने से इतर जगत को पहचानती है, वहीं उससे अपने को अलग भी करती है। संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवेदनाओं के आधार पर हम एक साथ तटस्थ और तन्मय, अपने, से परे और अपने में निमग्न, अपने से बाहर और अपने अन्दर एक साथ रह सकते हैं। सहानुभूतिशील कल्पना और कल्पनाशील सहानुभूति हमें आत्म-विस्तार के लिए उद्धत कर देती है। अर्थात् बाह्य और अन्तर का भेद उस समय लुप्त सा हो जाता है।

पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से

रसेल के अनुसार-

“वे सब जिनका कारण भौतिक हो और प्रभाव मानसिक हो, उन सबको हम संवेदनाओं के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। हमारी बोधवृत्ति के स्मृति-रहित तत्व संवेदनाएँ हैं। मानसिक जगत और भौतिक जगत जहाँ एक दूसरे से मिलते हैं वहाँ संवेदनाएँ होती हैं।”¹³

कोशग्रन्थों एवं विभिन्न विद्वानों के मत से स्पष्ट है कि संवेदना। वह मानसिक प्रक्रियासिद्ध होती है जो व्यक्ति को इस स्तर पर पहुँचाती है, जहाँ वह 'स्व' की पहचान करके बौद्धिक, तार्किक एवं हृदय के हथियारों द्वारा सब व्यक्त कर सके जो उसने भोगा, अनुभव किया है

संवेदना की स्मृति का फैलाव मात्र भोगने के धरातल की विषयवस्तु न होकर महसूस करने की प्रवृत्ति का भी पोषक है। क्योंकि जैसे-जैसे आधुनिकता की आँधी विराट रूप धारण करती जा रही है वैसे-वैसे संवेदना का क्षेत्र विस्तार भी आधुनिक होता जा रहा है। अतः सबसे पहले 'आधुनिक' शब्द को देखते हैं-

आधुनिक शब्द हिन्दी में अंग्रेजी के 'मॉडर्न' शब्द के अनुवाद के रूप में स्वीकृत हुआ था। 'माडर्न' की व्युत्पत्ति 'लेटिन-भाषा' से हुई है। जिसका अर्थ है वर्तमान में या अभी आसन भूत में घटित । लेटिन में इसका प्रयोग 'इन द टाइम' के अर्थ में भी होता है। यहाँ वर्तमान ही 'समकालीनता' है, लेकिन आधुनिक शब्द विविध और व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होने लगा जिसमें सामाजिक संरचना एवं मूल्यों में परिवर्तन या फिर नये मूल्यों में एक नई सोच का जन्म हुआ। इस नई सोच का जन्म ही नई संवेदना या आधुनिक संवेदना है। आजकल हम लोग इन दोनों के ही अर्थों में 'आधुनिकता और आधुनिक संवेदना' शब्द को प्रयुक्त करते हैं। आधुनिक संवेदना की आधुनिकता की दृष्टि से पहली धारणा कला संबंधी है। और दूसरी मूल्य संबंधी है। अपने आपको मॉडर्न कहने वाला कोई भी व्यक्ति स्वयं को परंपराओं से अलग करता है। परंपरा को पुरातनता से जोड़ता है। और आधुनिकता को समकालीनता से संवेदना के स्तर पर आधुनिक मनुष्य अपनी पहचान बनाने में सबसे पहले पारंपरिक संवेदना से एक दूरी बनाकर चलता है। वैसे संवेदना तो मूल प्रवृत्तियों से उत्पन्न होने वाली चीज है जिसमें परिवर्तन सामान्यतः कम ही होता है किन्तु आज हर व्यक्ति की सांवेदिक सोच बाजार के अधीन हो गयी है। उदाहरण के लिए हम देख सकते हैं कि जब चीजें सीमित थीं सुविधाएँ पहले कम थीं जितनी सुविधाएँ आँख के सामने दिखाई पड़ती थी संवेदना की मांग भी उसी बिन्दु तक सीमित थी। जैसे-जैसे वस्तुएँ समाज में बढ़ती जा रही हैं, वैसे-वैसे संवेदना की माँग भी बदलती जा रही है। क्योंकि साधनों की पूर्ति या कमी ही सुख-दुःख का कारण होती हैं। जब आवश्यकताओं की पूर्ति होती है तो सुख प्राप्त होता है। उनकी पूर्ति में बाधा हो तो दुःख होता है। हम सर्वविदित हैं कि सुख-दुःख का थरातलीय भाव ही संवेदना उत्सर्जन की नींव है।

अतः यह सिद्ध है कि आधुनिकता का पैमाना जैसे-जैसे बदलता जा रहा है, वैसे-वैसे समय, काल, परिस्थिति आवश्यकता के अनुसार संवेदना भी बदलकर आधुनिक होती जा रही है।

कोई भी साहित्य अपने समय की संवेदना की अवज्ञा नहीं कर सकता। साहित्य के सामने तो सबसे बुनियादी जिम्मेदारी रहती है, कि वह इस बात पर गौर करे कि हमारे समय में मनुष्य किस हाल में हैं। और जिस स्थिति में है तो ! उस स्थिति में क्यों है? मानव जाति में अनेक तब्दीलीप्रकट हुई। सामाजिक प्राणी से लेकर टेक्नोलाजिकल प्राणी सर अब 'साइबर प्राणी' बना। उसकी संवेदना को इतनी परिभाषाओं में घेरा गया कि वह जो उसकी अपनी निजी संपत्ति है, जिसे वह महसूस करके अभिव्यक्त कर सकता था। वह भी बाजार और समाज के हत्थे चढ़ गया। यह मनुष्य है कि संवेदना के हर परिभाषा को छोटा करता जा रहा हैं और आगे निकलता जा रहा है। कई नामुमकीन मुमकिन हो गये। अब किसी असम्भव का सम्भव बनना सम्भव विस्मय का विषय नहीं बनता बल्कि संवेदनात्मक सूचना माल बनकर सामने आता है।

संवेदना का क्षेत्र विस्तार

संवेदना (Empathy) एक मानवीय गुण है जो हमें दूसरों के भावनाओं, अनुभवों और स्थितियों को समझने और महसूस करने की क्षमता प्रदान करता है। यह हमें अन्य लोगों के जीवन में समानता, समरसता और समझौता बढ़ाने में मदद करता है। संवेदना का क्षेत्र विस्तारशील होता है और इसमें निम्नलिखित पहलुओं को शामिल किया जा सकता है। संवेदना दूसरे व्यक्ति के भावनाओं को समझने की क्षमता है। यह हमें दूसरे लोगों के मस्तिष्क में सोचने की क्षमता प्रदान करता है और हमें उनके दृष्टिकोण से दुनिया को देखने में मदद करता है।

संवेदनशीलता-

यह हमें दूसरे लोगों की भावनाओं को महसूस करने की क्षमता प्रदान करता है। इससे हम उनकी तकलीफ, दुःख, राजनीतिक अभियांता और उत्पीड़न को समझ सकते हैं और अपने व्यवहार में इसका ध्यान रख सकते हैं।

संवाद कौशल: संवेदना-

यह हमें अच्छे संवाद कौशल विकसित करने में मदद करती है। हम दूसरों के साथ सहजता से संवाद कर सकते हैं, उन्हें समझ सकते हैं और उनके अनुभवों का समर्थन कर सकते हैं।

सहानुभूति: संवेदना-

यह हमें दूसरे लोगों के साथ दुःख, खुशी, संकट और संघर्ष में खड़े होने की क्षमता प्रदान करती है। हम उन्हें समर्थन दे सकते हैं, उनके साथ संवेदनशीलता से खड़े हो सकते हैं और उनके संघर्षों को समझ सकते हैं।

व्यक्तिगत और सामाजिक संवेदना-

संवेदना हमें अपने परिवार, मित्र, समुदाय और समाज के लोगों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने में मदद करती है। यह हमें उनके साथ साझा खुशियों और दुःखों को समझने और सहभागिता करने की क्षमता प्रदान करती है। संवेदना एक महत्वपूर्ण गुण है जो हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक सम्बन्धों को मजबूत बनाता है। यह हमें उच्चतममानवीयता की ओर अग्रसर करता है और सामरिक समाधान और संघर्षों को तय करने में सहायता प्रदान करता है।

संवेदना का क्षेत्र अपार है और इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं को शामिल किया जा सकता है-

सांस्कृतिक संवेदना

हमें अन्य सांस्कृतिक परंपराओं, भाषाओं और मान्यताओं के प्रति समझदारी विकसित करने में मदद करती है। हम दूसरे लोगों की सोच, विश्वास और मूल्यों को समझ सकते हैं और संवेदनशीलता से इसका समर्थन कर सकते हैं।

व्यापारिक संवेदना

हमें व्यापारिक मामलों में अधिक सहज व्यवहार करने की क्षमता प्रदान करती है। इससे हम अपने ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझ सकते हैं, उनकी प्रतिक्रिया को समझ सकते हैं और उन्हें उच्चतम मानदंडों के साथ संतुष्ट करने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं।

सामरिक संवेदना

संवेदना हमें सामरिक संघर्षों में दूसरे व्यक्ति की जगह लेने की क्षमता प्रदान करती है। इससे हम दूसरे व्यक्ति की स्थिति, रुचियां, नीतियां और लक्ष्यों को समझ सकते हैं और समरसता बनाने के लिए संवेदनशीलता से कार्रवाई कर सकते हैं।

पेशेवर संवेदना

यह हमें अपने पेशेवर क्षेत्र में संपर्क में आने वाले लोगों की समस्याओं को समझने में मदद करती है। यह हमें उनके अनुभवों को समझने, ताकतों और कमजोरियों को पहचानने, और उन्हें सही समाधान प्रदान करने के लिए सक्रिय रूप से काम करने की क्षमता प्रदान करती है।

संवेदना हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पेशेवर स्तरों पर महत्वपूर्ण है। यह हमें सामरिक समझौता करने, सहभागिता बढ़ाने, संघर्षों को समाधान करने, अपने संबंधों को मजबूत करने, और एक सहायक, समरस और समर्थक समुदाय निर्माण करने में मदद करता है। संवेदना हमारे संबंधों को गहराई

और मानवीयता के साथ भर देता है, जिससे एक मधुर, समृद्ध और सहज जीवन का अनुभव होता है।

संवेदना (Empathy) साहित्यिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण और गहरा विषय है। संवेदना के माध्यम से लेखक और कवियों ने अपने रचनात्मकता को एक नई उचाई तक पहुंचाया है। संवेदना साहित्यिक दृष्टिकोण से न केवल लेखक के लिए बल्कि पाठक के लिए भी एक प्रभावशाली अनुभव होती है।

संवेदना के साहित्यिक क्षेत्र विस्तार

कथा-संवेदना

बहुत सारे कहानी-लेखकों ने अपनी कहानियों में संवेदना को मुख्य तत्व बनाया है। वे अपने पाठकों को एक अन्य व्यक्ति की जगह रखकर उनकी भावनाओं, अनुभवों और संघर्षों को समझाते हैं। ऐसे कहानियों को पढ़ने से पाठक संवेदनशील हो जाते हैं और उनका दिल और मस्तिष्क इन रचनाओं के माध्यम से प्रभावित होते हैं।

कविता-संवेदना

कविता संवेदनापूर्ण भावनाओं, आंतरिक अनुभवों और मनोभावनाओं को व्यक्त करने का एक अद्वितीय माध्यम है। कवियों द्वारा लिखी गई कविताओं में संवेदना की मधुरता, गहराई और आलोचनात्मक दृष्टिकोण देखा जा सकता है। यह कविताएं पाठक को मनोभावनाओं की अनुभूति कराती हैं और उनके अंतरंग जगत को छूने में सफल होती हैं।

नाटक -संवेदना

नाटक एक प्रभावशाली माध्यम है जो दर्शकों के और अभिनेताओं के बीच संवेदना को जोड़ता है। नाटकों में विभिन्न चरित्रों की भूमिकाओं के माध्यम से व्यक्तियों के अनुभवों को पेश किया जाता है। यह संवेदना के माध्यम से दर्शकों को समझने और सहभागिता करने की स्थिति में रचनात्मक ढंग से प्रेरित करता है।

उपन्यास-संवेदना

उपन्यास एक बहुत बड़ी और गहरी कथा है जो लेखक की संवेदना को व्यक्त करने के लिए अवसर प्रदान करती है। यहां लेखक अपने पाठकों को कहानी के मुख्य पात्रों के साथ संवेदनशील होने की प्रेरणा देते हैं और उन्हें उनके दुःख, खुशी, संघर्ष और प्रगति के साथ एकांत में खड़े होने का मौका देते हैं। संवेदना साहित्यिक क्षेत्र में अद्वितीय एकता, ब्रह्मभाव और व्यापकता को प्रकट करती है। इसके द्वारा लेखक और कवि न केवल वाणी का उपयोग करते हैं, बल्कि उनकी रचनाएं उनके पाठकों के भीतर भावनात्मक सामरस्य और सहभागिता जगाने का कार्य करती हैं।

यहां पर संवेदना के कुछ और साहित्यिक क्षेत्र के विस्तारित पहलुओं को देखना तर्कसंगत हैं-

भावपूर्ण वर्णन

साहित्यिक क्षेत्र में लेखकों का विशेष महत्वपूर्ण कार्य होता है भावपूर्ण वर्णन करना। वे अपनी रचनाओं में दृश्य, आवाज, गंध, रस, और स्पर्श को सांस्कृतिक और भावनात्मक रूप से प्रस्तुत करके पाठकों को एक गहरे अनुभव में डालते हैं। यह संवेदनापूर्ण वर्णन पाठक को वास्तविकता का अनुभव कराता है और उन्हें कथाओं और कविताओं के माध्यम से जीने का एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करता है।

समाजशास्त्रिय संवेदना

साहित्यिक क्षेत्र में सामाजिक मुद्दों, अभियांताओं और सामाजिक विवादों को प्रकट करने का एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। यह संवेदनापूर्ण रचनाएं पढ़ने से पाठक सामाजिक न्याय, सामरिकता और विविधता के मामले में संवेदनशीलता विकसित करते हैं। वे उन्हें आईडेंटिटी, बाधाओं, और सामाजिक परिवर्तन की पहचान करने के लिए प्रेरित करते हैं।

इतिहास-संवेदना

इतिहास की संवेदनापूर्ण रचनाएं व्यक्तियों के इतिहास में समझदारी, संघर्ष और सहभागिता के क्षणों को प्रस्तुत करती हैं। यह संवेदनापूर्ण रचनाएं पढ़नेसे पाठक इतिहास के आंशिक साक्षी बनते हैं और अन्य लोगों के जीवन में हुए ऐतिहासिक घटनाओं को समझने की क्षमता प्राप्त करते हैं।

मानवतावादी संवेदना

साहित्यिक क्षेत्र में मानवतावादी संवेदना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेखकों और कवियों के माध्यम से पाठकों को मानवीय मामलों, मानवाधिकारों, समानता के मुद्दों, और व्यक्ति के महत्व को समझाया जाता है।

संवेदना के अर्थघटन में ही यह स्पष्ट हो जाता है कि जब प्राणी जगत के सुख-दुःख, विचार-वाणी, आचार-व्यवहार में समझ की स्थिति उत्पन्न होकर अभिव्यक्ति धारण करती है तो वह संवेदना की परिभाषा होती है। अतः इसका क्षेत्र विस्तार भी अत्यन्त व्यापक होना चाहिए और है भी । संवेदना के क्षेत्र पर विहंगावलोकन किया जाय तो साहित्यिक दृष्टि से हिन्दीसाहित्य में इसका अत्याधुनिक सांवेदिक प्रक्रिया बहुत नवीन है। जो लगभग प्रगतिवाद से प्रारंभ होती है।

हमारा युग सूचनाआधारित युग है। अब हम सूचना और ज्ञान के मध्य फर्क करना भूल गये हैं । आज के बालक पहले के मुकाबले ज्यादा नॉलेजफुल हैं। बड़ी बहस हो सकती है इस पर कि वे क्या जानते हैं। क्या सूचनाएँ ही ज्ञान है? बच्चों को सूचनाएँ बहुत हैं पर क्या सूचना का दम्भ ज्ञान के रूप में माना जाए, तो हम स्वीकार कर लेगे? मुश्किल यह है कि आज सूचनावान होना प्राथमिक हो गया है। और संवेदनावान होना गौण हो गया है । गाँधी जी कहते थे कि हमारा जो भारतीय मन है, उसकी संवेदना का क्षेत्र केवल लिखाई-पढ़ाई के सीमा में बँधी नहीं है। केवल विश्वविद्यालयों में, ऊचे संस्थानों में डिग्रियाँ लेने से नहीं आती। एक भारतीय का जो

सहज मन होता है, उसकी सहज संवेदना होती है। गाँधी जी की पुस्तक "हिन्दी स्वराज"का सौवां वर्ष मनाया गया 2009 में। उसपर आरोप लगाया गया कि वह आधुनिक संवेदना के विपरीत है। आज जब हम गहराई से विचार करते हैं तो सोचना पड़ता है कि क्या जब गाँधी जी लिख रहे थे, तो क्या आधुनिकता का विरोध कर रहे थे ? वे उस आधुनिकता का विरोध कर रहे थे जो पश्चिमी औपनिवेशिक शासन की परियोजना के रूप में छा रही थी। हमारे अपने भारतीय मन की सहज संवेदना पर छा रही थी। संवेदना की सीमा का कोई निर्धारण या अन्तिम बिन्दु का रेखांकन करना थोड़ा मुश्कील है किन्तु इसके क्षेत्र विस्तार पर विश्लेषण करते-करते इसकी प्रवृत्ति जरूर खुल जाती है।

प्रो. राजेन्द्र कुमार लिखते हैं कि - "प्रश्न यह है कि क्या केवल सूचना से हमारा काम चल जायेगा। कम से कम साहित्य इस बात को नहीं मानता। अगर रचनाकार के रूप में काम करना है तो कम से कम हम तो इस शर्त को नहीं मानते कि सूचनावान होकरके ही मनुष्य बना जा सकता है। संवेदना की आधुनिकता को कैसे परिभाषित किया जाय? या जो हमारे समय का लेखन है संवेदना की आधुनिकता को कैसे पहचाने ? वैसे तो यह उसमें कह सकते हैं कि संवेदना शब्द अपने आप में ही आधुनिक है जब पारंपरिक रूप में हम पहले साहित्य की या काव्य की चर्चा करते थे तो उसमें दो पक्ष होते 'भाव पक्ष' और 'कलापक्ष' बाद में आधुनिक होने के क्रम में हमने भाव-पक्ष के संदर्भ में एक नया शब्द रखा, 'भावबोध' अकेला 'भाव' शब्द अनुभूति की ओर इशारा करता था और अकेला बोधशब्द विचारों की तरफ इशारा करता था। हमने जाना है कि अनुभूति का अलग और विचार का अलग होना अपने समय की रचनाशीलता में नहीं चल सकता। तो 'भावबोध' शब्द ज्यादा सहीसिद्ध हुआ। क्योंकि उसमें विचार और अनुभूति की अविच्छिन्नता का औचित्य था।"¹⁴

साहित्य में प्रगतिवाद का आगमन एक नई विचार धारा लेकर प्रकट हुई। वह है 'अनुभूति और विचार' का क्या अनुपात होना चाहिए। विचार पर विचारधारा का दबाव बढ़ा और विचारधारा तथा सुन्नबद्धता के कारण स्थिर होने लगा, अनुभूति की अंतरंगता पर हावी होने लगा। तब 'अज्ञेय' ने तथा 'नई कहानी' के आन्दोलनों ने अनुभूति की प्रमाणिकता, भोगा हुआ यथार्थ आदि की बात कही। दूसरी ओर जो अनुभूति के ऊपर ज्यादा बल देने वाले विद्वान

'डॉ० नगेन्द्र' जैसे आचार्य थे, उन्होंने कहा कि साहित्य में अनुभूति की ही जरूरत होती है, विचार की जरूरत नहीं होती। यह जो विचार और अनुभूति का तनाव पैदा हुआ, इस तनाव में फिर आधुनिक बोध ने एक नया शब्द ईजाद किया। वह शब्द था 'संवेदना'। अतः संवेदना की क्षेत्रियता शाब्दीक तौर पर विभिन्न रूप धारण करती रही और विभिन्न नामों से जानी जाती रही। जैसे-जैसे समाज की आवश्यकता बढ़ी 'संवेदना' अपने नामकरण के साथ-साथ कलेवर भी बदलती रही। 'रामस्वरूप चतुर्वेदी' ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा उसका नाम ही रखा 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' यह संवेदना शब्द का क्षेत्र विस्तार ही आधुनिकता से जुड़ा है। अलग से संवेदना के साथ आधुनिक लगाने की आवश्यकता नहीं है।

कुछ उदाहरण से बात करें तो समकालीन साहित्यिक संवेदना के क्षेत्र में हमारे समय की समस्याएँ होनी चाहिए। भूख, गरीबी, बेरोजगारी परमाणु बम से निजात इत्यादि की बात आनी चाहिए। भूख, दारिद्र्य के प्रति रचनाकारों की संवेदना पहले न रही हो, ऐसा नहीं है। बल्कि मध्यकालीन भाव- बोध में दान, दया, करुणा आदि मूल्य माने जाते थे। नैतिक रूप में भी और भावात्मक रूप में भी। बालकृष्ण राव की कविता है कि आधुनिक युग के संवेदना का क्षेत्र मानव को किस रूप में पहचानेगी- उन्होंने लिखा-

"आधुनिक मानव

हुई आरम्भ जब यात्रा तुम्हारी

बंद थे बाजार उस दिन रूढ़ियों के

आस्था की वाटिका उस दिन उजड़ी पड़ी थी।"¹⁵

साधारणतः अर्थज्ञान होने पर ही संवेदना का ज्ञान होता है। अर्थज्ञान के बिना संवेदना का ज्ञान नहीं संभव है। मनुष्य की शारीरिक संवेदना आन्तरिक दशाओं में तब्दील होने पर अनुभवीत होती है। मानसिक संवेदना में मनुष्य सुखदुखानुभव करता है। मनुष्य जो घटना देखता है उस घटना के अनुभव को प्राप्त कर वह संवेदना जागृत करता है। यदि घटना का क्षेत्र दुखात्मक सीमा से जुड़ा है तो संवेदना का क्षेत्र, वेदना की अनुभूति करायेगी और घटना सुखमय है, तो अनुभूति या संवेदनाकाक्षेत्र आनंद प्रवण होता है। जीवन में हर्ष और विषाददोनो प्रकार की संवेदना से मनुष्य जुड़ता है। सुख-और दुःख के संबंध में 'रसेल' के विचार हैं- "सुख संवेदना का लक्षण या मानसिक घटना है जिसमें किसी घटना के घटित होने का प्रवर्तित किया जाता है। और दुःख संवेदना का लक्षण या मानसिक घटना है जिसमें घटना के बाबतप्रेरित कोया संकल्पित परिवर्तन के कारण कम या अधिक परिवर्तन उक्त घटना के अवसान में होता है।"¹⁶

आज समाज भ्रष्टाचार, गुटबाजी वैमनष्य तथा चारित्रिक-हास के कारण मनुष्य एकांत की दुनिया में पहुँचकर भी हार नहीं मानता उसे संघर्ष करके पुर्नस्थापित संवेदना ही करती है। "रागात्मिका वृत्ति के प्रसार के बिना विश्व के साथ जीवन का प्राकृत सामंजस्य घटित नहीं हो सकता। जब मनुष्य के सुख और आनंद का मेल शेष प्रकृति के सुख सौंदर्यके साथ होजायेगा, जब उसकी रक्षा का भाव तृण-मूल, वृक्ष-लता, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, सबकी रक्षा के भाव से समन्वित हो जायेगा,

तब उसके अवतार का उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा और वह जगत का सच्चा प्रतिनिधि हो जायेगा।"17

उद्देश्य की पूर्णता ही संवेदना के समन का कारण तत्व है। संवेदना का क्षेत्र विस्तार व्यापक है यह व्यक्ति के जन्म से पूर्व प्रारंभ होती है और जीवन पर्यन्त चलती रहती है। मनोविज्ञान के क्षेत्र से उठी यह मान्यता आज साहित्य, समाज, राजनीति के दाँव-पेच रिश्तों के ढिलाव एवं कसाव के बुनियादों को भी सृजन कर रही है।

व्यक्ति के जीवन से जुड़े हर बिन्दुओं को प्रभावित करने वाला कारक संवेदना है। जिस-जिस स्तर पर वह प्रभावित होकर कुछ अनुभव करता है वह संवेदना का क्षेत्र है। यदि किसी भी कारण से, किसी घटना या संयोग से प्राणी-जगतका कोई भी जीव जिस स्तर पर कुछ महसूस किया, या विचार आया सब संवेदना के दायरे में सामिल किया जाना चाहिए- डर, गुस्सा, हर्ष, विषाद, सुख, दुःख, खाना-पिना, रोना-हँसना आवश्यकता, उपेक्षा जिन भी चीजों के कारण मनुष्य से लेकर चीटी पर्यन्त जीव कुछ फील करे वह संवेदना के क्षेत्र की सीमा है। किसी का मत है- "साहित्य समाज का दर्पण है।" यदि यह यथार्थ है तो समाज में घट रही घटना व्यक्ति सम्मत है। घटनाओं का अभिज्ञान संवेदना सम्मत है। अतः ऊपर| बताए गये बिन्दुवार विवरण संवेदना के क्षेत्र माने जा सकते हैं।

संवेदना का क्षैतिक आधार जितना हृदय सम्मत है, उससे कहीं ज्यादा बौद्धिक जागृति पर क्योंकि हृदय-सम्मत संवेदना 'भाव' के काफी करीब बैठती है। भाव का काम व्यक्ति को द्रवित करना है किन्तु संवेदना का कार्य व्यक्ति में सजगता लाना है चाहे सुखात्मक संवेदना हो या दुखात्मक। साहित्य में यदि संवेदना का अध्ययन करना है तो इसके दोनो पक्षों में तालमेल बिठाकर उस निष्कर्षपर पहुँचना होगाजहाँ वह व्यक्ति में जागरण ला सके । इसका क्षेत्र साहित्य की दृष्टि से एक तरफ हृदय,

बुद्धि से ज्ञान और भाव जगाकर व्यक्ति का परिष्कार करना है तो दूसरी तरफ मनोविज्ञान के स्तर पर शारीरिक और मानसिक अवस्था का ध्यान उनके आवयिक परिधि का विनिर्माण करता है।

इसके मनोविज्ञानिक पक्ष को देखे तो सबसे पहले साइकी Spsyche (मानसिकता) बना है? आत्मा के ईद-गिर्द 'मन' जो एक मुख्य भूमिका निभाता है। अब यह मन (Mind) होता कहाँ है? हमारा दिमाग (Brain) हार्डवेयर की तरह काम करता है और हमारा जो मन (Mind) है सॉफ्टवेयर के तरीके से काम करता है। अब ये सॉफ्टवेयर कहीं न कहीं फंक्शन को रिप्रजेंट करता है। इसमें थिंकिंग, फीलिंग, वाकिंग यानी की इच्छा को रिप्रजेन्ट करता है। ऐसा महसूस होता है कि मेरा मन कर रहा है कहीं घूम आऊं इत्यादि । जबकि दिमाग (Braine) एक ढाँचे को बनावट को (Structure) को रिप्रजेन्ट करता है। जैसे ही हम मन को समझने की कोशिश करते हैं हमारे सामने सबसे बड़ी प्रोब्लम आ जाती है कि हमारा मन हमारे शरीर से कैसे भिन्न है। इसे कहते हैं माइन्ड एण्ड बाँडी प्रोब्लम इस पर मुख्य रूप से काम किया था 'फैकनर'ने । ऊपर जो structure और Fruction की बात की गई है वह मनुष्य के शरीर और मन की व्याख्या करता है। जो दिखता है वह ढाँचा है। पर बेसिकली जो नहीं दिख रहा मन होता है। जाना तो मैं उसीके लिए जाता हूँ। अतः ब्रेन और माइन्ड में यह फर्क है कि मैं क्या दिख रहा हूँ यह ब्रेन है किन्तु मैं क्या कर रहा हूँ यह मन है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इसके आधार पर देखें तो जो हम बाहरी दुनियाँ की समझ बनाते हैं वह इन्हीं संवेदनाओं के आधार पर होती हैं। सबसे पहले जो सेंसेस (संवेदना) का विकास होता है वह है 'सूँघना' एक नवजात शिशु अपनी माँ को सूँघकर ही पहचान जाता है किन्तु 9 वर्ष की उम्र तक बालक में पाँचों प्रकार की संवेदनाओं का विकास हो जाता है।

संवेदना की कक्षाएं

- 1- बाहरी संवेदन ग्राहकों - प्रकाश, ध्वनि, तापस्पर्श, आदि ।
- 2- शरीर संवेदन ग्राहकों - इस प्रकार की संवेदना शरीर के अंगो या पूरे शरीर को बदल देती है। मांसपेशी, स्नायु आदि।
- 3- आन्तरिक संवेदन ग्राहकों - शरीर के आन्तरिकअंगों में परिवर्तन से अनुभूति का अनुभव होता है। जैसे - गले में भूख लगने पर पड़वा शोष ।

संवेदना के प्रकार

संवेदना के मुख्यतः पाँच प्रकार हैं।

- 1- दृष्टि संवेदना
- 2- श्रवण संवेदना
- 3- स्पर्श संवेदना
- 4- गंध संवेदना
- 5- स्वाद संवेदना

स्पष्टतः सेंस से ही आता है 'सेंसेशन' यानी 'संवेदना' यानी हम किसी चीज की जो अनुभूति करते हैं, वह हम कैसे करते हैं? उसको हम संवेदना में महसूस कैसे करते हैं? ये सारी चीजे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हमारे मन से जुडी होती है और हमारा मन जुड़ा होता है हमारे साईकी से।

इसको देखने की कोशिश करते हैं कि कैसे हमारी संवेदना किसी चीज को लेकर अलग होती है जिससे परसेप्शन (PERCEPTION) का निर्माण होता है। उदाहरण के लिए- हमारे पास तीन लोग हैं और एक ऑब्जेक्ट।'। इस 'ऑब्जेक्ट' पर तीनों लोग अपने अपने दृष्टि से अपनी सोच रखेंगे" 'ऑब्जेक्ट' के रूप में एक 'वृक्ष'

रख दिया। पहला व्यक्ति बोला यह एक पेड़ है। दूसरा बोला नहीं जीवन है। तीसरा कहा कि यह एक 'नॉन लीविंग' वस्तु है जिसपर कोई फल नहीं लगे हैं। ऑब्जेक्ट एक ही है किन्तु बोध अलग-अलग होता है।

सरल शब्दों में हम कह सकते हैं बोध की यह धारणा व्यक्ति, वस्तु और उसके पर्यावरण से प्रभावित होती है। धारणा का अर्थ इन तीनों बिन्दुओं पर जोर देता है।

- बोध या धारणा एक व्यक्तिपरक प्रकृया है।
- धारणा मनुष्यों के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक लक्षणों दोनों के द्वारा निर्धारित की जाती है।
- इस प्रकार धारणा केवल आँखों के साथ ही नहीं दिखती है बल्कि यह एक और अधिक जटिल प्रक्रिया है जिसमें स्थिति का आकलन और भी अलग होता है।

संवेदना का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। इसी मनोवैज्ञानिक शारीरिक एवं मानसिक संवेदना के विकास का जो क्षेत्र बोध और धारणा तक पहुँचता है वहीं से वह मनोविज्ञान के सीमा का अतिक्रमण करके साहित्य और दर्शन जीवन एवं कला, इत्यादि क्षेत्रों की यात्रा करता है।

संवेदना और साहित्य में अंतर्संबंध

संवेदना और साहित्य दोनों आपसी अंतरसंबंध की एक महत्वपूर्ण पहलू हैं। संवेदना मनुष्य की भावनाएं, भावनात्मक अनुभव, और आंतरिक अनुभूतियों को संकेत करती है, जबकि साहित्य उन भावनाओं को व्यक्त करने और साझा करने का एक माध्यम होता है। संवेदना मनुष्य के आंतरिक जगत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह उसकी भावनाएं, उत्साह, खुशी, दुःख, रोमांच, प्रेम, घृणा आदि को जीवंत रखती है। संवेदना उन अनुभवों का उत्पन्न होने का कारण होती है, जो हमें अन्य लोगों और जगत के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। साहित्य एक कला और साहित्यिक क्रिया है जो

संवेदना को व्यक्त करने का माध्यम होता है। साहित्य के माध्यम से लेखक और कवि अपनी संवेदनाओं, विचारों, अनुभवों, और विचारधाराओं को शब्दों में प्रकट करते हैं। यह उन्हें अपनी विचारधाराओं को साझा करने, पाठकों को प्रभावित करने और संवेदना में सहभागिता करने की स्थिति में ले जाता है।

यद्यपि संवेदना और साहित्य अलग-अलग हैं, लेकिन दोनों के बीच गहरा अंतरसंबंध होता है। साहित्य उस रूपांतरण का कार्य करता है जहां संवेदना को शब्दों और भाषा के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। यह अभिव्यक्ति का माध्यम होता है जिसके माध्यम से संवेदनाओं को रूपांतरित किया जाता है ताकि उन्हें अन्य लोगों तक पहुंचाया जा सके।

साहित्य के माध्यम से, लेखक या कवि विभिन्न रूपों में संवेदनाओं को प्रस्तुत कर सकते हैं। कहानियों, कविताओं, उपन्यासों, नाटकों और अन्य साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से, वे अपने विचारों और भावनाओं को शब्दों में आदान-प्रदान करते हैं। साहित्यिक रचनाएं पाठकों को संवेदनशील बनाती हैं, उन्हें समय-समय पर भावनात्मक अनुभव कराती हैं और उन्हें समाज के विभिन्न मुद्दों और प्रश्नों के प्रति जागरूक करती हैं।

साहित्य आपकी संवेदना को प्रभावित कर सकता है और आपको नए और अनूठे दृष्टिकोण और अनुभव साहित्य आपकी संवेदना को विस्तारित कर सकता है। जब आप साहित्य को पढ़ते हैं, आप रचनाकार की दृष्टि, विचारधारा, और संवेदना में समाहित होते हैं। आप साहित्य के माध्यम से विभिन्न व्यक्तियों, समाजिक परिवेशों, और सांस्कृतिक परिदृश्यों के साथ जुड़ सकते हैं। साहित्य आपकी संवेदना को विकसित करने में भी मदद कर सकता है। यह आपको नई और अनूठी भावनाओं, अनुभवों, और परिप्रेक्ष्यों के साथ परिचित कराता है। आप साहित्य के माध्यम से

विभिन्न चरित्रों के साथ जीवन की विविधता का अनुभव करते हैं और इससे आपकी संवेदना का विस्तार होता है।

इसके साथ ही, साहित्य आपको सामाजिक मुद्दों और मानवीयता के मुद्दों के प्रति जागरूक बनाता है। कविताएं, कहानियाँ, और नाटकों के माध्यम से, साहित्यिक कला आपको समाज के विभिन्न मुद्दों, जैसे सामाजिक न्याय, लैंगिकता, जातिवाद, राजनीति, और मानवाधिकार, पर सोचने और विचार करने के लिए एक ठोस धरातल प्रदान करता है।

साहित्य संवेदना को जागृत करने और समाज को सोचने पर प्रेरित करने के साथ-साथ, उसे एक व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरणा भी देता है। कई बार, साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत की जाने वाली विचारधाराएं और कथाएं लोगों को सोचने पर मजबूर करती हैं, उन्हें संवेदनशील बनाती हैं और उन्हें कार्रवाई के लिए प्रेरित करती हैं।

जब हम साहित्य को पढ़ते हैं, हम सामाजिक, राजनीतिक, और आध्यात्मिक मुद्दों के साथ संपर्क में आते हैं। यह हमें अलग-अलग दृष्टिकोण और विचारधाराओं से परिचित कराता है और हमारी संवेदना को विस्तारित करने में मदद करता है। यह हमें सामान्यतः अनदेखा किए जाने वाले मुद्दों पर ध्यान देने और उन्हें समाजीकरण के प्रति सक्रिय होने के लिए प्रेरित करता है।

साहित्य और संवेदना के बीच एक अटूट संबंध होता है, क्योंकि साहित्य संवेदना को व्यक्त करने का माध्यम है और संवेदना साहित्य को जीवंत रखती है। साहित्य लेखक की आत्मा को दर्शाता है, जो संवेदना के रूप में उभरती है और शब्दों के माध्यम से अद्यतित होती है। यह संवेदना की गहराई, रंग, स्वर, और विभिन्न भावों को साझा करने की क्षमता रखता है। साहित्यिक कृतियों के माध्यम से, हम

अन्य लोगों की संवेदना में सहभागिता करते हैं, उनकी अनुभूतियों को समझते हैं और उनके साथ संवाद स्थापित करते हैं।

संवेदना और साहित्य एक-दूसरे को पूरक बनाते हैं। संवेदना हमारी मानसिक और भावनात्मक धारणाओं की गहराई को बढ़ाती है, जबकि साहित्य हमें उन धारणाओं को साझा करने के लिए शब्दों की सामर्थ्य प्रदान करता है। संवेदना हमारे अन्दर प्रज्वलित होती है, जबकि साहित्य हमें आदर्शों, समस्याओं, और मानवीय अस्तित्व के माध्यम से विचार करने पर विचारशील बनाता है।

इस तरह, संवेदना और साहित्य एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं और आपस में घुल मिलते हैं। साहित्य लिखने और पढ़ने की प्रक्रिया संवेदना को उत्पन्न करती है और संवेदना साहित्य को जीवंत रखती है। साहित्य के माध्यम से, हम भावनाओं की संगति को अनुभव करते हैं, विभिन्न काल, स्थान, और संदर्भों में यात्रा करते हैं, और नए दर्शनात्मक सृजनात्मकता का अनुभव करते हैं।

संवेदना और साहित्य का अंतरसंबंध हमें सामाजिक और मानवीय विचारों के माध्यम से संप्रेषण करता है। साहित्य समाज के दुःख, सुख, उत्पीड़न, सामाजिक न्याय, प्रेम, और संघर्षों को छूने का कार्य करता है। यह हमें विचारशील बनाकर सामाजिक सुधार के लिए प्रेरित करता है।

संवेदना और साहित्य द्वारा हम अपने आंतरिक स्वर्ग और बाह्य जगत के बीच संवाद स्थापित करते हैं। यह हमें विचारों, भावनाओं, और प्रतिक्रियाओं को साझा करने की क्षमता प्रदान करता है, जो हमें सम्पूर्ण मानविकी में साझा बनाता है।

संवेदना और साहित्य का अंतरसंबंध एक आदर्श संगम की तरह है, जहां संवेदना और भावनाएं साहित्य के माध्यम से व्यक्त होती हैं। साहित्य रचनाकारों को संवेदनाओं की गहराई में जाने, उन्हें व्यक्त करने और साझा करने का एक विशेष माध्यम प्रदान करता है। विभिन्न लेखकों, कवियों और साहित्यिक कलाकारों के

माध्यम से, संवेदनाओं की एक विस्तृत विविधता का अनुभव होता है और साथ ही इससे पढ़ने वाले और श्रोताओं के मन और आत्मा में संवेदनशीलता और सहानुभूति की भावना पैदा होती है।

साहित्य की अन्य महत्वपूर्ण भूमिका यह है कि वह हमें विचारों, दर्शनों, और मूल्यों के साथ जोड़ता है। विभिन्न लेखकों और कवियों के द्वारा व्यक्त की जाने वाली भावनाओं, अभिप्रेत दृष्टिकोणों, और समसामयिक मुद्दों के साथ हम अपने समाज की बदलती हुई धारणाओं और नवीनतम सोच के प्रति जागरूक होते हैं। साहित्य के माध्यम से हम दुनिया के साथ जुड़ते हैं, जगत की विभिन्नता को समझते हैं और दूसरों के परिप्रेक्ष्यों से परिचित होते हैं।

इस प्रकार साहित्य और संवेदना एक दूसरे को प्रभावित करके सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। जब हम साहित्य को पढ़ते हैं, हम अलग-अलग व्यक्तियों और समाज के अनुभवों का सामरिक रूप से आदान-प्रदान करते हैं। इसके परिणामस्वरूप, हमारी संवेदना विकसित होती है, हम दूसरों के साथ सहभागिता करने के लिए प्रेरित होते हैं, और सामाजिक परिवर्तन के लिए सक्रिय होते हैं।

इसके अलावा, साहित्य और संवेदना का अंतरसंबंध हमें एक ऊर्जावान, संवेदनशील और आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रेरित करता है। साहित्य के माध्यम से हम विचारों की दुनिया में खो जाते हैं, भावनाओं को संवेदनशीलता से देखते हैं और अपने आंतरिक सत्य को प्रकट करते हैं। संवेदना से प्रेरित साहित्य हमें आत्मसात करने, स्वयं को पहचानने और अपने अस्तित्व के साथ संपर्क स्थापित करने का मार्ग प्रदान करता है। इस प्रकार, संवेदना और साहित्य के अंतरसंबंध का महत्व अत्यधिक है। यह हमें समय की गहराई में प्रतिष्ठित करती है, हमारी सांस्कृतिक और मानसिक पहुंच को विस्तृत करती है और हमें संवेदनशीलता, सहानुभूति और नवीनतम सोच के प्रति प्रेरित करती है। साहित्यिक रचनाएं हमें अद्यतित और विचारशील रखती हैं,

हमारे आंतरिक स्वर्ग और बाह्य जगत के बीच एक संवाद स्थापित करती हैं और हमारे अनुभवों को व्यक्त करने का माध्यम बनती हैं।

संवेदना और साहित्य के अंतरसंबंध की अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि वे हमें एकजुट करते हैं, अलग-अलग समाजों, भाषाओं, और संस्कृतियों को एकत्र करते हैं और एक वास्तविकता के साथ हमें बाहरी और आंतरिक जगत के बीच संपर्क स्थापित करते हैं। वे हमें मानवीय अनुभव के साथ जोड़ते हैं और हमारी सांस्कृतिक और सामाजिक भूमिका में सहभागिता करते हैं। संवेदना और साहित्य का यह अंतरसंबंध एक निरंतर विकास और समृद्धि की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संवेदना हमारे मन की गहराई में छिपी हुई भावनाओं को जागृत करती है, जबकि साहित्य हमें उन भावनाओं को साझा करने के लिए साहित्यिक कला की सहायता से प्रेरित करता है। इस रूप में, संवेदना और साहित्य अध्ययनशीलता, सामाजिक संवाद, और मानवीय सहभागिता के लिए प्रेरित करता है ।

संवेदना का वास्तविक जुड़ाव मानव संवेदना से माना जाता है। संवेदना के बिना साहित्य की सर्जना संभव नहीं हो सकती । दर्शन, चिंतन, ज्ञान-विज्ञान सबके जीवन में आत्मसात होकर मानव संवेदना का अंग बनना पड़ता है तभी शक्तिशाली साहित्य की रचना संभव हो सकती है। मनुष्य की संवेदना केवल प्रतिक्रियात्मक नहीं है बल्कि इसका अर्थ चिंतन से भी होता है। इसप्रकार किसी भी मानसिक घटना में संवेदना मिलेगी। साहित्यकार प्रत्यक्ष यथार्थ को केवल इन्द्रियों के माध्यम से ग्रहण नहीं करता बल्कि मन, बुद्धि और सम्पूर्ण भावनात्मक सत्ता के साथ भी करता है। साहित्यकार की रचना प्रक्रिया दुहरी होती है।"

कमोवेश ऐसा पाया जाता है कि संवेदना और सहानुभूति एक ही है किन्तु यह धारणा औचित्यपूर्ण नहीं है। सहानुभूति का संबंध करुणा से है जबकि संवेदना का संबंध चेतनता है। किसी व्यक्ति की वेदना को देखकर स्वयं दुःखी हो जाना

सहानुभूति होती है। इससे उलट संवेदना में अधिक व्यापकता एवं गहराई देखने को मिलती है। संवेदना जागृत अवस्था में लाकर व्यक्ति में असीम कल्पना को जन्म देने में सहायक होती है जिससे साहित्य को व्यापक फलक प्रदान किया जा सकता है। यदि हम यह कहें कि संवेदना का अभिव्यक्ति परक स्वरूप ही साहित्य की आत्मा है और संवेदनाओं के माध्यम से सर्जित साहित्य जिसमें प्राणीजगत की संवेदनात्मक संस्कृति सुरक्षित है वह संवेदना का कोश ग्रंथ है तो अतिशयोक्ति नहीं होगा। संवेदना का संबंध ज्ञान की प्रक्रिया से है। संवेदना को हम ना केवल पूर्ण रूप से भौतिक कह सकते हैं, न ही मानसिक, संवेदना में कल्पना की क्रिया प्रधान होती है। संवेदना द्वारा ही साहित्य का सृजन संभव है, क्योंकि साहित्य के सृजन के लिए साहित्यकार के मन में सर्वप्रथम भाव उत्पन्न होते हैं और इन भावों को साहित्यकार अपनी लेखनी द्वारा अभिव्यक्त करता है। तभी साहित्य की रचना होती है। साहित्यकार और साधारण व्यक्ति की संवेदना में बहुत अन्तर होता है। साधारण व्यक्ति की संवेदना जागृत होकर उसे सुख-दुख का अनुभव कराकर हर्ष एवं विषाद की अवस्था का अभिज्ञान प्रदान कर उस सुख से आनंद की क्रिया में या फिर विषाद के कारण चिंता की क्रिया में ढकेलकर इससे निजात पाने या प्रसन्न रहने की अवस्था में संलग्न कर देती है किन्तु साहित्यकार की संवेदना सार्वभौमिक, सार्वजनिक समवेतता, एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से भावित होकर उसे विशिष्ट कृति की सर्जना में संलग्न कर देती हैं। जिसके कारण आनेवाली पीढ़ी अपना परिष्कार कर सके। ऐसी समस्याओं से निजात पा सके जिसे उसके पूर्वजों ने भोगकर सीखा है।

टी.एस. इलियट के अनुसार -“रचना धर्मी संवेदना समाज को नूतन अनुभूतियाँ प्रदान करती है। परिचित अनुभूतियों का नवीन बोध कराती है और जिन अनुभूतियों को हम जानते हैं, किन्तु जिनकी अभिव्यक्ति के लिए हमें शब्द ज्ञात नहीं है। उन्हें

अभिव्यजना प्रदान करती है। इसके परिणाम स्वरूप हमारी चेतना का विस्तार और संवेदना शक्ति का परिष्कार होता है।”²⁰

वस्तुतः साहित्य और संवेदना का अटूट संबंध है। यदि साहित्यकार के हृदय में संवेदनात्मक अनुभूतियाँ उत्पन्न होंगीं तभी वह उसे साहित्य में प्रस्तुत कर सकता है। साहित्यकार का व्यक्तित्व इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उसमें संवेदनाओं को ग्रहण करने की शक्ति बहुत तीव्र होती है। जिस युग में साहित्यकार रहता है उस युग में यथार्थ को वह अपने व्यक्तित्व एवं संवेदना के रूप में ढालकर अपनी सर्जना को आकार देता है? अतः यह कहा जा सकता है कि साहित्यकार का व्यक्तित्व संवेदना से ही विकसित होता है। संवेदना ही मनुष्य के व्यक्तित्व से उसका परिचय करवाती है। उसे उच्च कोटि का व्यक्तित्व प्रदान करती है।

साहित्य और संवेदना के सम्बन्ध पर विचार करें तो यह सिद्ध होता है कि साहित्य का बीज तत्व संवेदना है क्योंकि संवेदना अभिव्यक्ति कौशल प्रदान करने की नियामक है। हम वेदना तत्व को लें, तो भी जितने उदाहरण साहित्य का रूप विधान करने वाले हैं सब संवेदना के मूल में वेदना को देखकर साहित्यकार या कवि होने का दावा ठोकते हैं। सुमित्रानंदन पंत ने लिखा-

“वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान
उमड़कर आखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान।”²¹

प्रकृति के सुकुमार कवि ने साहित्य में 'वेदना', 'बियोगी' और 'आह' शब्द को ध्यान में रखकर साहित्य संवेदना का ही प्रतिफलन है, यह सिद्ध किया है। साथ ही यह अपने-आप ही स्पष्ट हो जाता है, कि संवेदना में वेदना की प्रधानता है। अतः हम कह सकते हैं कि मनुष्य के जीवन के इर्द-गिर्द घट रही घटना विशेष जो प्राणी को

वेदना प्रदान करती हो, वह तो साधारण जन की वेदना हुई किन्तु साधारणजन की वेदना से जो आह निकली, उससे लयबद्ध प्रस्फुटित गान जब किसी संवेदनशील व्यक्ति में उद्भूत हो और अभिव्यक्ति परक रूप लेकर कृति का आकार धारण करे तो वह संवेदना से प्रकटित साहित्य हुआ जिसमें 'वियोग' और 'आह' जागृत हुआ वह कवि, लेखक कहा गया। जो आकार लिया वह साहित्य हुआ।

जिसके द्वारा 'कवि', 'लेखक', 'साहित्य' प्राप्त हुआ वह हुआ 'संवेदना'। साहित्य और संवेदना एक सिक्के के दो पहलू नहीं बल्कि उन्हें एक दूसरे की आवश्यकता उसी प्रकार हैं जैसे-जीवन को आक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है ।

साहित्य और संवेदना के 'बीज' यानि 'वेदना' का विस्तार विषद है। साहित्य में प्रस्तुत सभी दृष्टांत लगभग वेदना से ही अनुप्राणित होते हैं। वेदना जीवन की आवश्यकता को महसूस कराती है। आवश्यकता आविष्कार कराती है, आविष्कार से ही व्यक्ति सुविधा सम्पन्न होता है। सुविधाओं का अभाव वेदना पैदा करती है। अतः मनुष्य जहाँ से प्रारम्भ करता है उसका अवसान भी वहीं आकर होता है। जहाँ से अवसान होता है वहीं अभाव की संवेदना जागती है जिसके कारण दर्द या वेदना होती है। यही वेदना समूचे विश्व, मानव, प्राणी, जगत, जीव, साहित्य, दर्शन, मीमांशा, विज्ञान, इत्यादि तत्वों में रची बसी है। इसके कारण ही नाश और निर्माण होता है। वेदना हुई तो बदले की भावना से 'हिरोशिमा' और 'नागासाकी' जैसे बड़े विनाश हुए। 'वेदना' हुई करुणा उपजा तो 'कोरोना' जैसी वैश्विक महामारी जो पूरे विश्व को प्रभावित की है, उसको हराने के लिए शत्रु देश या मित्र देश एक दूसरे की मदद भी कर रहे हैं उदाहरण के लिए भारत; अमेरिका और अन्य देशों को 'दवा' एवं डॉक्टर-गुप की सुविधा प्रदान करने की वशुधैवकुटुम्बकम् की भावना देखी जा सकती है। अतः वेदना साहित्य एवं संवेदना के अन्तर्संबंध को ही रूपायित नहीं करती, बल्कि

समूचे विश्व के सभी घटकों में अपनी उपस्थिति के महत्ता का प्रमाण पेश करती है। छायावाद के आधार स्तम्भ सुमित्रा नंदन पंत 'वेदना' की व्याख्या करते हुए लिखते हैं-

"अश्रु !-दिल की गूढ़ कविता के सरल
औ' सलोने भाव । माला की तरह
विकल पल में पलक जपते हैं तुम्हें,
तुम हृदय के घाव धोते हो सदा।
वेदने! तुम विश्व की कृश दृष्टि हो,
तुम महा संगीत, नीरव हास हो,
है तुम्हारा हृदय माखन का बना
आँसुओं का खेल भाता है तुम्हें !
वेदना !-कैसा करुण उद्गार है!
वेदना ही है अखिल ब्रह्माण्ड यह,
दुहिन में, तृण में, उपल में लहर में,
तारकों में, व्योम में है वेदना !
वेदना कितना विशद् यह अप है।"²¹

वेदना का विस्तार फलक संवेदना के माध्यम से चेतना जगाया यह तो ठीक है । किन्तु, क्या साहित्य पूर्ण रूप से संवेदना पर ही आश्रित है, यह कहना थोड़ा कठिन होगा। यदि हम साहित्य का प्रारंभ काल देखें तो ज्यादातर ग्रंथ संस्कृति के संरक्षण, यशोगान, आनंद की भावना की प्राप्ति अकल्याण से रक्षा, सम्पत्ति अर्जन का साधन, आचार-व्यवहार के नियमों के पालन हेतु लिखे गये। कुछ चर्तुवर्ग फल प्राप्ति हेतु भी लिखे गये -

"काव्यं यशसे अर्थकृते
व्यवहार विदे अशिवेतरक्षते

सधःपरिनिवृत्तये, कान्तासंमितयोपदेशयुजे²²

“धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचच्छण्यम् कलाषुच

करोति कीर्तिं पीर्तिं च साधु काव्यनिबंधनम्²³

जैसे- सर्वप्रथम भामह ने पहले-पहल पारलौकिक तत्वों संवेदना काव्य का कारण तत्व या उद्देश्य माना और सिद्ध किया की धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, सभी कलाएँ यश एवं प्रीति काव्य है। समय एवं प्रवृत्ति के परिवर्तन के साथ आवश्यकताएँ बदली। आवश्यकताएँ बढ़ी तो 'मम्मट' लौकिकता पर जोर देते हुए साहित्य की सर्जनात्मक व्याख्या किया और उसे छः तत्वों में रूपायित किया। आगे चलकर हिन्दी साहित्य में आदिकाल, भक्तिकाल रीतिकाल में साहित्य सर्जना नये-नये कलेवर बदले, किन्तु कुछ नवीनता के साथ प्रस्तुत हुए। ऐसा नहीं की उनमें संवेदना नहीं है, क्योंकि बिना संवेदना काव्य सृजन संभव ही नहीं हैं। संवेदना भी अपना रूप बदलती रहती है। देश-काल, वातावरण के अनुसार। संवेदना शब्द अपने पूर्ण व्यक्तित्व के साथ पहचाना जाने लगा।

पूर्वकालिक साहित्य में भी संवेदना थी किन्तु उसको सार्वभौमिक पहचान प्रगतिवादी कवियों ने दिया। उसको सार्वदेशिक प्रयोगवादियों ने बनाया। आज संवेदना की पहचान साहित्य में जन-जन तक है इसपर शोध कार्य बहुतायत मात्रा में हो रहे हैं, इस प्रवृत्तिका विस्तार साहित्य में 'विमर्शों' के माध्यम से संभव हो पाया हैं। चाहे वह 'स्त्री विमर्श', दलित विमर्श, आदिवाशी विमर्श हो या-फिर किन्नर विमर्श । विमर्शों के माध्यम से साहित्य में संवेदनात्मक प्रवृत्ति की बाढ़ सी आ गई। जिसके कारण अनेकानेक उपन्यास, कहानी, जीवनी, आत्मकथाओं का सृजन हुआ। सम्पूर्ण साहित्य आज संवेदना के साहित्य के नाम से पुकारा जाने लगा जिससे एक पूरा साहित्य का इतिहास ग्रंथ लिखा गया 'हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास' रामस्वरूप चतुर्वेदी।

साहित्य का संवेदना से इतना गहरा संबंध है कि आचार्य पण्डित रामचन्द्र शुक्ल ने अपने साहित्य के इतिहास ग्रंथ के प्रारंभ में ही जनता के 'चित्तवृत्तियों' की बात कही। यही चित्तवृत्तियाँ ही 'संवेदना' हैं। "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अन्त तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही। 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है। अतः कारण स्वरूप इन परिस्थितियों का दिग्दर्शन भी साथ-ही साथ आवश्यक होता है। इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य का विवेचन करने में यह बात ध्यान रखनी होगी कि किसी विशेष समय में लोगों में रुचि विशेष का संचार और पोषण किधर से और किस प्रकार हुआ।"²⁴

साहित्य शब्द का प्रयोग ही संवेदना के बाद लिया जाना संभव है। अक्सर यह बात स्पष्ट किया जाता है कि साहित्य और संवेदना में अंतर संबंध स्थापित कीजिए। लगभग इसी मनोधारणा को भंग करने हेतु, यहाँ स्पष्ट करना उचित है, कि साहित्य और संवेदना में अंतर संबंध ही नहीं बल्कि बिना संवेदना के साहित्य होता ही नहीं है। यदि कहीं नामकरण हुआ भी तो उसे साहित्य की श्रेणी में नहीं गिना जाना चाहिए। व्यक्ति के सुख, दुःख, हर्ष, विषाद जीना, मरना, प्यार, गुस्सा, नफरत, मोहब्बत, शादी-विवाह जन्म-मृत्यु, रोजगार, बेरोजगारी, लालसा इच्छा ये सभी प्रकार की आवश्यकताएँ, मान-सम्मान, घर-गाड़ी बंगला, अमीरी-गरीबी, दौलत, शोहरत आदि के कारण अभाव से मोह उत्पन्न हो या प्रभाव से वैराग्य सब संवेदना के अन्तर्गत आते हैं। इन्हीं या यों कहें की इन जैसी अनेक विधिक अन्य विषयवस्तुओं का वर्णन, अभिव्यक्ति, कला-सर्जना साहित्य है। "मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का

पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गतिहीनता और परमुखोपेक्षिता से बचा न सके जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को परदुःखकातर और संवेदनशील न बना सके उसे साहित्यकहने में मुझे संकोच होता है।"²⁵

संवेदना और नारी मन

संवेदना और नारी मन दो प्रशासनिक शब्द हैं जो महिलाओं की अंतर्निहित भावनाओं और जीवनशैली को समझने के लिए उपयोग किए जाते हैं। यह शब्द महिला मनोविज्ञान और समाजशास्त्र में आधारित हैं।

संवेदना महिलाओं की आंतरिक दुनिया और उनकी भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता है। इसे मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से उनकी अंतर्निहित प्रतिक्रियाओं, विचारों और आवेदनों को समझने के लिए उपयोग किया जाता है। संवेदना बाहरी अभिव्यक्ति के माध्यम से दिखाई नहीं देती है, लेकिन इसे शब्दों, अभिव्यक्ति और शारीरिक भावनाओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है। महिलाओं की संवेदनाएं उनके भावनात्मक स्वरूप, सामाजिक संदर्भ और व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होती हैं।

नारी मन एक व्यापक शब्द है जो महिलाओं के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक पहलुओं को समझने के लिए उपयोग किया जाता है। यह महिलाओं के संवेदनशीलता, सोचने की प्रक्रिया, भावनाएं, सामाजिक रुचियां और समाज में उनकी भूमिका पर आधारित होता है। नारी मन व्यक्तिगत, सामाजिक और सांस्कृतिक पाठशालाओं, परंपराओं, साहित्यिक रचनाओं और उनकी व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से समझा जाता है।

संवेदना और नारी मन का अध्ययन महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें उनकी अंतर्निहित भावनाओं और अनुभवों को समझने में मदद करता है। यह हमें महिलाओं की समस्याओं, उनकी व्यक्तिगत खुशहाली के लिए उपाय ढूंढने में मदद करता है और सामाजिक परिवर्तन को समझने में सहायता प्रदान करता है।

इस प्रकार, संवेदना और नारी मन दो प्रमुख शब्द हैं जो महिला संवेदना और नारी मन की महत्वपूर्णता को समझाने में मदद करते हैं। इन शब्दों के माध्यम से हम महिलाओं की अंतर्निहित भावनाओं, जीवनशैली और मानसिकता को समझ सकते हैं, जो हमारे समाज में उनकी पहचान और स्थिति का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

महिलाओं की संवेदनाएं और नारी मन मानवीय विकास के बारे में भी अद्वितीय ज्ञान प्रदान करते हैं। महिलाओं की संवेदनाओं का समय-समय पर अध्ययन करने से हमें उनके सामाजिक, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सजगता बढ़ाने का अवसर मिलता है। यह हमें समाज में महिलाओं के प्रति समर्पण को सुनिश्चित करने, उनके अधिकारों की रक्षा करने और सामाजिक प्रगति में उनकी भूमिका को मजबूत करने में मदद करता है।

संवेदना और नारी मन के माध्यम से हम महिलाओं के अनुभवों को समझकर उनकी आत्म-पहचान को बढ़ावा दे सकते हैं। इससे महिलाओं की मनोयोग्यता और उनके स्वप्नों का महत्व समझा जा सकता है, जो उन्हें सशक्त बनाने का साधन बन सकते हैं। संवेदना और नारी मन के माध्यम से हम समाज में महिलाओं के साथ संविधानिक, सामाजिक और आर्थिक समानता की आवश्यकता को बढ़ावा दे सकते हैं।

हालांकि, हमें यह समझना आवश्यक है कि संवेदना और नारी मन केवल महिलाओं के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं हैं। इनका महत्व पुरुषों और समाज के अन्य सदस्यों के लिए भी है, क्योंकि यह हमें समस्याओं को समझने, सहभागिता को बढ़ाने और संविधानिक माध्यम से समानता को सुनिश्चित करने में मदद करते हैं।

संक्षेप में कहें तो, संवेदना और नारी मन महिलाओं के मानसिक और भावनात्मक जीवन को समझने में महत्वपूर्ण हैं। यह हमें समाज में महिलाओं के प्रति समर्पण को सुनिश्चित करने, उनके अधिकारों की सुरक्षा करने और सामाजिक प्रगति में उनकी भूमिका को मजबूत करने में मदद करते हैं। संवेदना और नारी मन का

अध्ययन हमें व्यापक समझ प्रदान करता है और समाज में सामरिकता, सामाजिक न्याय और समृद्धि को बढ़ाने में मदद करता है। इसके माध्यम से महिलाओं के अनुभवों को समझना व्यापकता से आवश्यक है, चूंकि महिलाएं समाज की मूल नींव होती हैं। उनकी आत्म-पहचान, भावनाएं और जीवनशैली समाज के विकास और प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके बिना, समाज अधूरा और अविकसित हो जाता है।

संवेदना एक शक्तिशाली गुण है जो महिलाओं को नए और अद्वितीय रूपों में जीने और अपने अनुभवों को व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करता है। संवेदना के माध्यम से महिलाएं दूसरों के भावों को महसूस कर सकती हैं और साझा कर सकती हैं, जिससे उनकी समस्याओं और जरूरतों को समझना संभव होता है। यह महिलाओं को अपनी सत्ता, विचारशक्ति और पुरुषों के साथी बनने की क्षमता देता है।

नारी मन की अध्ययन से हमें महिलाओं की सोच, भावनाएं और प्रतिक्रियाएं समझने का अवसर मिलता है। इसके माध्यम से हमें पाठशालाओं, संगठनों, विचारधाराओं और साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से महिलाओं के अनुभवों को देखने की समर्था मिलती है। यह हमें महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता और सम्प्रेषण की महत्वपूर्णता को समझाता है और समाज में उनकी भूमिका को महत्वपूर्णता देता है। जब हम महिलाओं के अनुभवों को गलत या आपत्तिजनक मानकर उनकी भावनाओं को नजरअंदाज करते हैं। समाज में स्थानांतरण की जगह, हमें संवेदना के साथ सुनने और समझने की आवश्यकता है। इससे हम एक संवेदनशील समाज बना सकते हैं जहां महिलाएं स्वतंत्रता, समानता और सम्मान के साथ जीने का अवसर प्राप्त करती हैं।

इस प्रकार, संवेदना और नारी मन महिलाओं की मानसिक और भावनात्मक विशेषताओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इनका अध्ययन हमें महिलाओं की पहचान को समझने, उनकी समस्याओं को हल करने और समाज में सामाजिक न्याय

और समृद्धि को सुनिश्चित करने में मदद करता है। संवेदना और नारी मन का अध्ययन हमें एक उदार, समानतापूर्ण और सजीव समाज के निर्माण में मदद करता है, जहां महिलाओं के भावनात्मकता, संवेदनशीलता और मानसिक स्वतंत्रता को सम्मान दिया जाता है। संवेदना और नारी मन के माध्यम से हम समाज में जातिवाद, लिंगवाद और विषमता के खिलाफ लड़ाई लड़ सकते हैं और समानता, सामरिकता और न्याय को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

नारी मन की संवेदना, उसका अर्न्तमन, यानी की समझ, उसका प्रत्यय के प्रति बोध, विचार, बुद्धि से ज्यादा भाव और ममता के तत्व को लेकर उठती है। यही कारण भी है कि सन् साठ के दशक के बाद नारी विमर्श अस्तीत्व में आया। संवेदना उठती थी मन घायल होता था। कसक और छटपटाहट की सिलवटें ढीली होती रहीं युगों-युगों से, किन्तु समर्पण, ममता, मर्यादा, देवी, नारीत्व, शील, संकोच की सांकल में वह इसको नियति मानकर बंधी रही और इसी को जीवन का श्रृंगार मान लिया। अतः : कामायनीकार को लिखना पड़ा ।

“समर्पण लो सेवा का सार
सजल संसृति का यह पतवार
आज से यह जीवन उत्सर्ग
इसी पद-तल में विगत-विकार”²⁶

भारतीय संस्कृति में नारी ने सर्वस्व समर्पण किया है। नारी संवेदना हमेशा-हमेशा से प्यार और विश्वास की चाह में इस समाज से समझौता करती आयी है। वह अपनी चेतना, विचारयहाँ तक कि भावना को भी परिवार और समाज के सापेक्ष बना लिया है। संवेदना का कार्य होता है जैसा भोगा गया हो जागृति वैसी ही उठे, लेकिन इतिहास गवाह है, साहित्य दर्पण है इस तथ्य की हकीकत दिखाने का कि नारी ने अपनी संवेदना को उसी हिसाब से जागृत किया जिस हिसाब से परिवार और समाज

उसे स्वीकार सके। यही व्यवस्था आगे चलकर नारी की नियत बन गई और कमोवेश आज भी समाज के मनोधारणा में गुलामी की चादर ओंढे रेंग रही है।

श्रद्धा समर्पण करते हुए कहती है -

"दया, माया ममता लो आज
मधुरिमा लो अगाध विश्वास
हमारा हृदय-रत्न-निधि स्वच्छ
तुम्हारे लिए खुला पास।"²⁷

लेकिन यह रेंगना कब तक ? हर चीज की एक सीमा होती है। नारी संवेदना की गुलामी टूटी है। उसका मोह-भंग हुआ है। नारी जीवन समकालीन युग में न केवल विचार करती है बल्कि उसमें पंख लगाकर उड़ान भी भर रही है। वह उन बंधनों से छुटकारा पाने का आग्रह करती हुई कहती है-

जीवन वास्तविकता का सफर
मिली मंजिल किताबों या तजुर्बे से
लीक पीटे कशमकश की डगर
जीवन मुझमें घुलकर या जेहन के जर्रे से।
रूप कितने हैं, मेरे दहलीज के आन की ?
माँ, बहन, गृहलक्ष्मी, देवी अबला !
क्या कोई स्थान हैं
मेरे निर्णय और विचार की?

नारी मन की संवेदना, अभिव्यक्ति परक स्वरूप; इन्ही निर्णय और विचार की स्वतंत्रता से पल्लवित एवं पुष्पित होकर एक आन्दोलन खड़ा करके साहित्य की मुख्य-धारा का स्वतंत्र विमर्श बना।

संवेदना एक ही होती है वह नारी की हो या नर की साहित्य के मुख्य-धारा के विविध विधाओं में देखें या दलित विमर्श, किन्नर विमर्श या प्रवासी साहित्य में किन्तु इनका स्वरूप प्रत्येक धारा में भिन्न होता है। नारी संवेदना भी संवेदना के मूल को त्यागे हुए निजी प्रशाखाओं की विशिष्टता से आगे बढ़ रही है।

निष्कर्ष

नारी संवेदना को किसी परिभाषा में बाँधना अत्यन्त कठिन है। कारण कि संवेदना शब्द शाब्दीक धरातल पर जितना सीमित है अर्थ एवं मूल्य की दृष्टि से उतना ही व्यापक है। शारीरिक अवयवों से बोध का संस्पर्श कराने वाला तत्व जब दर्शन और साहित्य के कैनवास से अपना संबंध स्थापित करता है, तो मानव जाति के सार्वभौमिक, सार्वदेशिक एवं सार्वजनिक बिन्दुओं को बड़ी आसानी से उभारने में अपना अक्षुण्य योगदान देता है। संसार के प्राणियों में किसी घटना का प्रथम ज्ञान संवेदना के माध्यम से ही जाग्रह होता है। समस्याओं के प्रति संचेतना, इन्द्रियों के संवेदन क्रिया का प्रतिफलन होता है जिससे प्राणी क्रियाशील होता है। प्राणी का क्रियाशील होना संवेदना की पहली अभिव्यक्ति होती है। मनोविज्ञान में संवेदना के अवयव को आंगिक दृष्टि से रूपायित किया गया है। किन्तु दर्शन शास्त्र में संवेदना चिन्तन के विषयवस्तु से तादात्म्य स्थापित करता है। संवेदना में जब वेदना का भाव सम्मिलित हो जाता है तब वह साहित्य का सृजन करने में अपनी महती भूमिका अदा करता है। कालांतर में साहित्य अनेक विमर्शों से होकर गुजरता गया। विमर्शों का आरंभ ही संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का कारण है। जब साहित्य में नारी संवेदनशील होकर अपनी अभिव्यक्ति दी तब उसे स्त्री संवेदना से विभूषित साहित्य की संज्ञा प्रदान किया गया। वस्तुतः संवेदना का संबंध प्राणियों के स्वयं की चेतना से है। इसका क्षेत्र बहुत बड़ा एवं गहन है। यदि यह कहा जाय कि संवेदना साहित्य का प्राण तत्व है तो अतिशयोक्ति नहीं होगा।

संदर्भसूची :-

- 1- रामचन्द्रवर्मा, प्रामाणित हिन्दी कोश, पृष्ठ-1080
- 2- सं.डॉ.नगेन्द्र एवंडॉ.नरकडे,मानविकी परिभाषिक कोश: दर्शन खण्ड, पृष्ठ-180
- 3- मानविकी परिभाषा कोश, साहित्य खण्ड, पृष्ठ-332
- 4- ज्ञान शब्द कोश, पृष्ठ- 801
- 5- हिन्दी विश्वकोश खण्ड-23, पृष्ठ- 428
- 6- हिंदी शब्द सामर्थ्य पृष्ठ-17
- 7- संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृष्ठ-1192
- 8- एथेन्टिक सीनियर डिक्शनरी ऑफ द इंगलिश लंग्वेज, पृष्ठ- 1385
- 9- डॉ. शेखर शर्मा, समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक, पृष्ठ -2
- 10-डॉ. विरेन्द्र सिंह, अस्मिता के संवेदन, पृष्ठ- 03
- 11-डॉ. सुरेश सिन्हा, हिन्दी उपन्यास,पृष्ठ-57
- 12-डॉ. राजेन्द्र कुमार
- 13-राजमल बोरा, भाव, उद्वेग और संवेदना, पृष्ठ-116
- 14-संपादक कल्पनावर्मा, समकालीन लेखन और आधुनिक संवेदना, पृष्ठ-16,
- 15-वही, पृष्ठ -17
- 16-हरिचरणशर्मा, सर्वेश्वर की काव्य संवेदना और संप्रेषण, पृष्ठ-112
- 17-रामचन्द्रशुक्ल चिंतामणि- भाग-1, पृष्ठ- 04
- 18-राममनोहरत्रिपाठी, हिन्दी कविता संवेदना और दृष्टि, पृष्ठ-16
- 19-वही, पृष्ठ-36
- 20-वही
- 21-सुमित्रा नंदन पंत, ग्रंथि, पृष्ठ-40-41,
- 22-आचार्य मम्मट, काव्यप्रकाश, अलंकार निरूपण

- 23-आचार्य भामह, काव्यालंकार, अलंकार निरूपण
- 24-रामचन्द्रशुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-1
- 25-जयशंकरप्रसाद, कामायनी - श्रद्धा सर्ग, पृष्ठ-16,
- 26-वही, पृष्ठ-16